जड़ पर कुल्हाड़ा मारना

मैं • ईर्ष्या • घमंड • वासना

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण जुलै 2013

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : करूणा जेरोम, बाईफेथ डिज़ाईनूज

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Laying the Axe to the Root)

जड़ पर
कुल्हाड़ा
मारना

विषयसूचि

	परिचय	1
1.	मैं की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना	5
2.	ईर्ष्या की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना	29
3.	घमण्ड की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना	47
4.	वासना की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना	73

परिचय

और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिए जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं (मत्ती 3:10—12)।

यीशु मसीह की सेवकाई का संसार से परिचय कराते समय यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने कहा कि यीशु इस संसार में शुद्धीकरण का कार्य करने आया था। जो पेड़ अच्छा फल नहीं देता, उसकी जड़ पर रखी गई कुल्हाड़ी का उदाहरण उसने दिया। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने गेंहूं से भूसा अलग करने के बारे में भी कहा। सारांश रूप में, दोनों उदाहरण शुद्ध और साफ करने वाले कार्य का उदाहरण दिया। कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ जो यह सूचित करता है कि यह केवल डालियों और पत्तों को काटने के काम से ज़्यादा गहरा है। उसी तरह, मसीह समस्या की जड़ को मिटाने के लिए आया था। वह सतह से आग बढ़कर उन समस्याओं का निपटारा करता है जो उस सतह के नीचे है जो सामान्य तौर पर नज़र में आती है।

जबकि हम मत्ती 3:11 में उल्लेखित पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को महत्व देते हैं, हम इस तथ्य की ओर नज़रअंदाज़ करते हैं कि पद 11 उन दो पदों के बीच में दबा हुआ है जो उस शुद्धिकरण के कार्य के विषय में बताते हैं जो करने यीशु आया। हममें से कई लोगों ने इस तथ्य को नज़रअंदाज़ किया है कि उसका आना उस समय को भी दर्शाता है जब "कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है" और जब भूसा आग से जला दिया जाएगा। यद्यपि हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से, अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अनुभव से और पवित्र आत्मा के वरदानों के हमारे जीवन में प्रगट होने से आनंदित और अत्यानंदित हैं,

हम शायद ही पवित्र आत्मा के शुद्ध करने वाले कार्य की ओर ध्यान देते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से पहले और बाद में हमारे जीवनों में प्रभु यीशु का शुद्ध करने का सामर्थी कार्य है। यह दुख की बात है कि हममें से अधिकतर लोगों ने अपने जीवनों को उसके शुद्ध करने वाले कार्य के लिए खोला नहीं है और उसके बजाय केवल आत्मा के बपतिस्मे को पसंद किया है। यह महत्वपूर्ण है कि हम प्रभु को हममें पूरा कार्य करने दें।

यद्यपि परमेश्वर के वचन की तुलना मिठास से भरे मधु से, प्रति दिन की रोटी से जिसका हम आनंद लेते हैं, ताज़गी लाने वाली वर्षा से, राह दिखाने वाले दीपक से की गई है, वह उस आग के समान भी है जो भूसे को जला देती है, चट्टान को टुकड़े टुकड़े करने करने वाले हथोड़े के समान और जीवन और आत्मा को आरपार छेदने वाली दोधारी तलवार के समान भी है। हमारे जीवन के उन क्षेत्रों पर जिन्हें शुद्धता पाने की ज़रूरत है, हथोड़े, आग और तलवार के समान वचन के संयुक्त प्रभाव का शुद्ध करने वाला परिणाम होना चाहिए!

बाइबल कहती है, "और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन।" (मरकुस 16:20)। इस वचन को पढ़ने के बाद, कभी कभी जल्दबाजी में हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हम चाहे जैसे हों, परमेश्वर हमारे साथ कार्य करेगा। यद्यपि यह पूर्ण रूप से सच है कि परमेश्वर हमारे साथ कार्य करना चाहता है, फिर भी हमारे जीवनों में ऐसी कुछ बातें हो सकती हैं जो परमेश्वर को हमारे साथ कार्य करने से रोकती हैं। यदि हमारे जीवनों में ऐसी बातें हैं जो (परमेश्वर के हाथ को बांधती हैं) उसे हमारे साथ कार्य करने से रोकती हैं, तो उन बातों को दूर करना होगा।

मैं, ईर्ष्या, घमंड और वासना कुछ नकारात्मक बातें हैं जो परमेश्वर को हमारे साथ कार्य करने से रोक सकती हैं। जब हम प्रभु को अनुमति देंगे कि वह जड़ पर कुल्हाड़ी रखे और हमारे जीवनों के उन क्षेत्रों में शुद्धिकरण का कार्य करे, तब हम न केवल परमेश्वर के लिए, बल्कि एक दूसरे के लिए भी बेहतर लोग होंगे।

मैं • ईर्ष्या • घमंड • वासना

1
मैं की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना

अक्सर हम अपने संपूर्ण हृदय से मसीह की, और केवल उसी की महिमा करना चाहते हैं, फिर भी हमारी इच्छा अपने खुद के नाम को बढ़ावा देने, या सत्ता और प्रभाव के पद की चाह, या हमारे वरदानों, गुणों और योग्यताओं की मान्यता पाने की चाह से कलंकित होती है। यदि हम सावधान न रहे, तो हम जीवन में ऐसे स्थान में आ पहुंचेंगे जहां पर हम आत्मा के बजाय 'मैं' से प्रेरित होंगे। पवित्र आत्मा हमेशा मसीह को महिमा देगा (यूहन्ना 16:14), परंतु जो महिमा मसीह को मिलनी चाहिए उसे 'मैं' चुरा लेता है।

खतरा इस बात में है कि हममें से अधिकतर लोग कभी सार्वजनिक तौर पर यह कबूल नहीं करेंगे कि हम मैं से प्रेरित होकर काम कर रहे हैं। हम अच्छे विश्वासी हो सकते हैं जो प्रार्थना करते हैं, उपवास करते हैं और सारे सही काम करते हैं। और फिर भी, परमेश्वर की रोशनी को जब हम हमारे बाहरी जीवन से होकर हमारी अंतर्रात्मा की गहराइयों में प्रकाशित होने की अनुमति देते हैं, तब हम पाते हैं कि जो कुछ हम करते हैं, उसमें से बहुत कुछ आत्मा में नहीं जन्मा है, परंतु उसका जन्म मैं में हुआ है। हम में से अधिकतर लोगों के लिए मैं का क्रियाकलाप उसे पहचानने की हमारी से काफी सूक्ष्म होता है।

जो शरीर (मैं) से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है (यूहन्ना 3:6)। इसके दो स्पष्ट मूल हैं और जो स्व से जन्मा है उसे आत्मा के काम में बदला नहीं जा सकता, भले ही वह कितनी ही अच्छी तरह से क्यों न छिपा हो।

और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा। वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना;

वह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा। जो कोई उसे समान कुछ बनाए, वा जो कोई उसमे से कुछ पराए कुलवाले पर लगाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए (निर्गमन 30:31–33)।

पवित्र अभिषेक का तेल जो पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य का प्रतीक है, उसे शरीर पर नहीं डालना था, और अन्य किसी उद्देश्य से मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना था। जो मैं से या स्व से जन्मा है, उसे परमेश्वर अभिषेक नहीं कर सकता। वस्तुतः, शरीर के बल में आत्मा के कार्य की नकल करने में खतरा है (निर्गमन 30:33)।

जो शरीर (मैं) से जन्मा है, वह शरीर (मैं) और जो लोग शरीर में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:8)। अतः काम कितना ही बड़ा क्यों न हो, यदि वह शरीर में किया गया है, तो वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता।

यदि हम शरीर (मैं) में काटेंगे, तो हम भ्रष्टता, सड़ाहट और विनाश की फसल काटेंगे (गलातियों 6:8)। जो काम मैं से प्रेरित होकर किया जाता है, उसमें स्थायित्व नहीं होगा। ये काम काठ, घास और फूस है जो आग की कसौटी पर खरे नहीं उतरेंगे (1 कुरिंथियों 3:12,13)।

यदि मैं प्रेरित करता है, तो हम आत्मा के चलाए नहीं चल सकते क्योंकि जो पवित्र आत्मा चाहता है, उसका शरीर विरोध करता है (गलातियों 5:17)। इसके बजाए, हमें पवित्र आत्मा से प्रेरित दिशा को खोज निकालने की आवश्यकता है। हम अपने हृदयों को खोलें और प्रभु को अनुमति दें कि वह मैं की जड़ पर कुल्हाड़ा रखे।

सेवकाई में गलत उद्देश्य

कई तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कई भली मनसा से। कई एक तो यह जान कर कि मैं सुसमाचार के लिए उत्तर देने को ठहराया गया हूं, प्रेम से प्रचार करते हैं। और कई एक

तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाने हैं, यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करें (फिलिप्पियों 1:15–17)।

प्रेरित पौलुस यह बताता है कि मसीही लोगों के लिए गलत उद्देश्य से सही काम करना संभव है। वह कहता है कि कुछ लोग प्रचार करते हैं – सही काम करते हैं – परंतु स्वार्थी अभिलाषा, ईर्ष्या और लड़ाई–झगड़े से प्रेरित होकर।

मैंने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता (3 यूहन्ना 1:9)।

दियुत्रिफेस कलीसिया का एक सदस्य था जो महत्वपूर्ण स्थान चाहता था। प्रमुखता की चाह से प्रेरित होकर, उसने अन्य अगुवों के विरोध में ईर्ष्या से बात करना शुरू किया, उसने आतिथ्य करने से इन्कार किया और साथ के मसीही लोगों को अन्य अगुवों का आतिथ्य करने से रोकने लगा। यह वही व्यक्ति था जिसने कहा, "मैं चाहता हूं कि लोग मुझे देखें।" "मैं सुविख्यात होना चाहता हूं।" "मैं आगे के स्थान पर रहना चाहता हूं।" "मैं चाहता हूं कि लोग मेरी सुनें।" यह संभव है कि हम आत्मिक काम करें और फिर भी गलत उद्देश्य से प्रेरित हों। जो कुछ हम कर रहे हैं उसका समर्थन हम नहीं कर सकते, क्योंकि वह एक अच्छा कार्य दिखाई पड़ता है। परमेश्वर हमारे हृदय की गहराइयों को जांचता है ताकि हमारी हर क्रिया के पीछे क्या उद्देश्य छिपा है इसे देख सकें।

क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं (2 कुरिंथियों 2:17)।

कई लोग परमेश्वर के वचन का लाभ उठाते हैं। अंग्रेज़ी के पेडल इस शब्द का अर्थ है "व्यक्तिगत लाभ के लिए परमेश्वर के वचन में मिलावट करना।" अतः कुछ लोगों के लिए परमेश्वर के वचन का

मिलावट भरा संस्करण प्रचार करना संभव है, जो स्वार्थपूर्ण लाभ के लिए उनकी व्यक्तिगत् कल्पनाओं से कलंकित हो जाता है। यदि ऐसा पौलुस के समय हुआ था, तो यह अवश्य ही हमारे समयों में हो सकता है! जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, तो ऐसा करने हेतु हमें हमारे उद्देश्यों का ध्यान रखना है। क्या यह व्यक्तिगत् लाभ के लिए किया गया है? क्या यह स्वार्थपूर्ण अभिलाषा से किया गया है? क्या यह महत्वपूर्ण स्थान पाने के लिए किया गया है? यह ऐसे सवाल हैं जो हमें अपने आप से करने हैं।

जो मैं से जन्मा है उसे परमेश्वर अभिषेक नहीं कर सकता।

मैं की जड़ की अभिव्यक्ति

हम में मैं की जड़ है यह हम किस तरह जान सकते हैं? कभी कभी, हम यहां अनुमान लगाते हैं कि हमने लम्बे समय तक उपवास और प्रार्थना की है, इसलिए हमारा मैं या स्व पूर्ण रूप से मर गया है। हम एक निश्चित आत्मिक अनुशासन के अभ्यास पर निर्भर रहते हैं और यह जांचने में असफल रह जाते हैं कि अनुशासन के उस अभ्यास ने क्या वास्तव में अपने मूल उद्देश्य को हासिल किया है, इस मामले में मैं की जड़ को मिटाया है?

हम मैं की जड़ के कुछ प्रकटनों की चर्चा करेंगे। इनमें हमारी प्रवृत्तियों, विचार, या आचरण की अभिव्यक्तियों का समावेश है जो उसके पीछे छिपी हुई मैं की जड़ के दर्शक हैं। यदि हम इनमें से किसी प्रकटनों को या हमारी प्रवृत्तियों, विचार या आचरण की अभिव्यक्तियों को पहचान लेते हैं, तो हमें प्रभु से यह कहने की ज़रूरत है कि वह हमारे जीवनों में मैं की जड़ पर कुल्हाड़ा रखे।

खुद को बढ़ावा देना (सुविख्यात होने और मनुष्यों की पसंदगी पाने की चाह)

यदि मसीही व्यक्ति को चाह है कि वह एक अच्छे गायक के रूप में या अद्भुत प्रचारक के रूप में जाना जाए, और वह अपनी अभिलाषा से

प्रेरित है, तो यह खुद को बढ़ावा देना हुआ। जो हम करते हैं उसमें अच्छा होने की चाह और उसकी वजह से ख्याती या मान्यता हासिल करने की चाह रखना इसमें फर्क है। हमें ये प्रश्न पूछते रहना चाहिए, "जिन कामों को हम करते हैं, उन्हें क्यों करते हैं?" "कौन सी बात हमें सचमुच प्रेरित करती है?" ये बहुत सरल सवाल हो सकते हैं, परंतु फिर भी वे अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि किसी उन्नतिप्रद कलीसिया का पासबान कई हज़ारों की मंडली रखने की चाह रखता है, तो उसे अपने आपसे यह प्रश्न पूछने की ज़रूरत है: "क्या मैं सचमुच आत्माओं का उद्धार चाहता हूं या उसके पीछे खुद का नाम कमाने की इच्छा है?" यदि कोई वचन का प्रचार करने की इच्छा रखता है तो हमें यह पूछने की ज़रूरत है कि क्या ऐसा करने की वजह लोग वचन के द्वारा लाभ प्राप्त करें यह है या इसलिए किया जा रहा है क्योंकि वह व्यक्ति एक महान प्रचारक के रूप में पहचाना जाना चाहता है। इसके पीछे विवाद यह है कि उद्देश्य खुद को बढ़ावा देना है या सचमुच लोगों के लाभ में और केवल परमेश्वर की महिमा में वास्तविक दिलचस्पी है।

"मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता। तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?" (यूहन्ना 5:41,44)।

यीशु अपने समय के धार्मिक अगुवों को संबोधित कर रहा था और यह बता रहा था कि वे एकदूसरे से आदर पाने के लिए उत्सुक थे और उन्हें परमेश्वर की ओर से मिलने वाले सम्मान की कोई परवाह नहीं थी। हमें ऐसे स्थान में आने की ज़रूरत है जहां यीशु के समान, हमें मनुष्यों से आदर पाने की ज़रूरत नहीं है। यदि हम खुद के साथ ईमानदार रहे, तो हम यह जानेंगे कि हममें से बहुत कम लोग इस प्रकार का दावा कर सकते हैं! लोग हमारी प्रशंसा या सराहना करते हैं या नहीं इस विषय में हमें चिंतित नहीं रहना है। इसके बजाय, हमारी एक मात्र इच्छा परमेश्वर की ओर से आने वाले आदर की चाह रखना होनी चाहिए। हम केवल परमेश्वर को महिमा देने और लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के एकमात्र उद्देश्य से प्रचार करें, गाएं या सेवा

करें, और मनुष्यों से आदर पाने की इच्छा न रखें। जब मनुष्यों की प्रशंसा से अधिक स्वर्ग की प्रशंसा हमारे लिए ज़्यादा मूल्यवान होती है, तब हम जानते हैं कि मैं से या स्व से मुक्त हैं। जब हमारी इच्छा केवल परमेश्वर से प्रशंसा पाना होती है और मनुष्यों की प्रशंसा की चाह से कलंकित नहीं होती, तब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं और मैं से मुक्त होते हैं।

"जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं" (यूहन्ना 7:18)।

हम अपने आपसे पूछने की ज़रूरत है कि हम किसकी महिमा की खोज में हैं – परमेश्वर की या खुद की? जब हम सेवकों, कलीसियाओं, सेवा संस्थाओं या मसीही संगठनों के रूप में घोषणा करते हैं या विज्ञापन देते हैं, तब हमें इस बात के प्रति अत्यंत सावधान रहना है कि हम खुद को बढ़ावा न दें, परंतु प्रभु यीशु मसीह को दें। अर्थात, पहचान के लिए और अन्य कानूनी उद्देश्यों के लिए नाम ज़रूरी है, परंतु इस सच्चाई को मानना महत्वपूर्ण है कि इसका उद्देश्य स्वयं को बढ़ावा देना नहीं है। जब हम खुद के विषय में, स्वयं के विषय में बोलते हैं, और अपना नाम बढ़ाना चाहते हैं और मनुष्यों की प्रशंसा की याचना करते हैं, तब हम अपनी महिमा खोजते हैं। जब हम सचमुच केवल परमेश्वर की महिमा चाहते हैं, और केवल उसी की महिमा की खोज में लगे रहते हैं, तब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं और हम में कोई अधर्म नहीं पाया जाता।

इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो (1 कुरिं. 10:31)।

आज मसीही सेवा में भी खुद को बढ़ावा देने की प्रथा चारों ओर दिखाई देती हैं। लोग अपने नाम को और अपनी सेवकाइयों के नामों को पाने के लिए उत्सुक रहते हैं और एक रात में मशहूर बनना चाहते

हैं। हम देखते हैं कि लोग खुद की अभिलाषा पूरा करने में लगे हुए हैं, सेवक इस बात की होड़ में लगे हैं कि कौन अधिक अभिषिक्त है, सेवकाइयां अपना ही माल आगे बढ़ाने में लगी हुई हैं और बहुत कुछ चल रहा है। मैं जीवित और दमनकारी बन चुका हूं। अब समय है कि हम रूक जाएं और ईमानदारी के साथ हमारे हृदय के मकसद को जांचें। क्या हम सचमुच परमेश्वर की ओर से आने वाले सम्मान की खोज में हैं या क्या हम खुद से और खुद को बढ़ावा देने हेतु अपने काम में लगे हुए हैं, कि हमारे पास आत्मा द्वारा प्राप्त होने वाली सौम्य ताड़ना को सुनने के लिए न तो समय है और न ही संवेदनशीलता? जो कुछ हम करते हैं वह केवल परमेश्वर को महिमा देने के उद्देश्य से किया जाए।

महत्वाकांक्षा (ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने की चाह जिसने परमेश्वर के लिए बड़े बड़े काम किये हैं)।

इसलिए यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है, तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो परंतु दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन् दूसरों की हित की भी चिन्ता करे (फिलिप्पियों 2:1–4)।

पौलुस हमें चेतावनी देता है कि हम खुद की बड़ाई के लिए या अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने हेतु कुछ न करें। परंतु इससे यह सूचित होता है कि यह संभव है कि हम परमेश्वर के काम करें और अपनी स्वार्थपूर्ण अभिलाषाओं से प्रेरित हों। इस अर्थ से स्वार्थपूर्ण अभिलाषा ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने की चाह है जिसने परमेश्वर के लिए बड़े बड़े काम किये हैं। परमेश्वर के पास हम में से हर एक के लिए अद्भुत योजनाएं हैं। वह चाहता है कि हम इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को हिलाने वाले बनें। परंतु परमेश्वर के राज्य के लिए हमारे सारे प्रयासों में यदि हमारा उद्देश्य परमेश्वर का प्रचार करने के बजाए खुद का नाम कमाना होगा, तब हम स्वार्थपूर्ण अभिलाषा

से प्रेरित हैं। हमारा उद्देश्य या मकसद लोगों को सेवा पाते हुए देखने की प्रामाणिकतापूर्ण चाह होनी चाहिए, फिर वे हमारा नाम जानें या न जानें, या हम कौन हैं जानें या न जानें। यदि सारी बातों के अंत में, "मैं" हिरो बनने वाला हूं, तब हम स्वार्थपूर्ण अभिलाषा से प्रेरित हैं, मसीह के प्रेम से नहीं।

हम यहां पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहेंगे, "हमारे स्वप्न में या दर्शनों में कौन हिरो है? क्या परमेश्वर है या मैं? कितनी बार हमने लोगों को यह गवाही देते सुना है, "मैंने प्रार्थना की और वे चंगे हो गए!" ज़ोर परमेश्वर जिसने चंगाई दी उस पर होने के बजाए, "मैं" पर होता है। परमेश्वर के बिना हमारी कोई भी प्रार्थना किसी काम की नहीं। जो महिमा पाता है वह वही व्यक्ति है जिसने प्रार्थना की, न कि प्रार्थना का उत्तर देने वाला परमेश्वर। हम बड़ी बड़ी सुसमाचार प्रचार सभाएं लेते होंगे, परंतु यदि हम स्वार्थपूर्ण अभिलाषा से प्रेरित हैं, तो उस सभा के द्वारा परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता क्योंकि जो शरीर में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। लोग फिर भी विश्वास करेंगे और इस प्रकार की सभाओं में आशीष पाएंगे क्योंकि परमेश्वर अपने वचन को पूरा करने हेतु जागृत है (यिर्मयाह 1:12)। अतः कहे गए परमेश्वर के वचन के कारण, परमेश्वर अपने वचनों को लोगों के जीवनों में पूरा करेगा। परंतु, परमेश्वर के नाम में ऐसे कई अद्भुत काम जो उसके हृदय से नहीं आते, करने के बजाए पिता की इच्छा पूरा करना अधिक महत्वपूर्ण है (मत्ती 7:21–23)।

> जब मनुष्यों की प्रशंसा से अधिक स्वर्ग की प्रशंसा हमारे लिए ज़्यादा मूल्यवान होती है, तब हम जानते हैं कि जानते हैं कि मैं से या स्व से मुक्त हैं। जब हमारी इच्छा केवल परमेश्वर से प्रशंसा पाना होती है और मनुष्यों की प्रशंसा की चाह से कलंकित नहीं होती, तब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं और मैं से मुक्त होते हैं।

स्वार्थपूर्ण अभिलाषा की विरोधी औषधी है नम्र हृदय और दूसरों को खुद से बेहतर समझना, जैसा कि पौलुस कहता है। हमें दूसरों को प्राथमिकता देना है और उनकी अभिरूचियों पर ध्यान देना है – उनके लाभ, उनका हित और उनकी आशीषें।

आत्म–निर्भरता (पवित्र आत्मा पर निर्भर रहने के बजाए खुद पर निर्भर रहना)

क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते (फिलिप्पियों 3:3)।

इसलिए अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उसको ऐसा नहीं जानेंगे (2 कुरिं. 5:16)।

इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है (1 कुरिं. 3:21)।

"आत्म–निर्भरता" प्रभु पर निर्भर रहने के बजाए खुद पर या दूसरों की योग्यताओं पर निर्भर रहना है। अक्सर, हम मनमानी ढंग से अपनी शिक्षा, अनुभव, योग्यता और कौशल की वजह से किसी कार्य में लग जाते हैं। हमें अपनी योग्यताओं पर भरोसा होता है, और हम अनजाने में सोचते हैं, "यदि परमेश्वर मेरी मदद भी न करे, तौभी मैं यह काम पूरा कर सकता हूं।" अर्थात, हम अपने शब्दों में यह नहीं कहते! बल्कि हम उचित आत्मिक विधान करके अपनी आत्म–निर्भरता को दूसरा रंग देते हैं या छिपा देते हैं।

प्रेरित पौलुस के समान, हमें उन लोगों की ओर देखना सीखना है जो आत्मा में हैं, बजाए इसके कि हम उनकी ओर देखें जो शरीर में हैं। लोगों को पास जो है या स्वाभाविक तौर पर वे जैसा दिखते हैं, उसके अनुसार लोगों का मूल्यांकन न करें। परंतु, मसीही विश्व में आम प्रथा यह है कि हम लोगों को अक्सर "शरीर के अनुसार" जानना चाहते

हैं। हम गुप्त रूप से उन लोगों के साथ रिश्ता रखना चाहते हैं जिन्हें लोग बहुत सम्मान देते हैं, इस आशा से कि वे हमें जीवन और सेवकाई में "ऊंचा उठाएंगे।"

क्या हमारे भारत देश की कलीसियाओं में यह आम बात नहीं है? हम विदेशियों की कैसे खोज में रहते हैं, और उन्हें जल्द ही अपने साथ स्थान देते हैं, उन्हें प्रसन्न करते हैं और उनसे संपर्क की सारी जानकारियां ले लेते हैं! हम गुप्त रूप से यह आशा करते हैं कि इस सम्बंध के द्वारा हमें विदेश जाने का अवसर प्राप्त होगा। हम में से प्रायः सभी किसी न किसी समय ऐसा करने के दोषी हैं। परंतु पौलुस हमें चेतावनी देता है कि हम शरीर के अनुसार लोगों को न मानें। हमें सबके साथ समान बर्ताव करना है – उनकी राष्ट्रीयता, ओहदा, उनका रंग आदि के आधार पर नहीं।

यदि परमेश्वर इन ईश्वरीय सम्बंधों को नहीं बनाता और सफलता हासिल करने की हमारी व्यक्तिगत अभिलाषा से प्रेरित होकर हम उनकी खोज में लग जाते हैं, तब हम खुद पर निर्भर रहने लगते हैं – खुद की या किसी और व्यक्ति की योग्यता पर निर्भरता। यह शरीर पर निर्भरता है और इससे परमेश्वर को प्रसन्नता नहीं मिलती।

तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:4,5)।

प्रभु के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। कार्य करने की हमारी अयोग्यता के कारण नहीं। अर्थात्, हम में से कई लोग अपनी ही योग्यता के द्वारा कई बातें हासिल कर सकते हैं। परंतु मसीह के बगैर हम परमेश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण कामों को नहीं कर पाएंगे, उन कामों को जिनका अनंतकालिक स्थायित्व है।

आत्म–रक्षा (अपने प्राण को प्रिय जानना)

हम में से हर एक पास आत्म–सुरक्षा का यह गुण अंतर्निहित होता है जो परमेश्वर द्वारा दिया गया है और आवश्यक है। हम व्यस्त रास्ते पर यूं ही दौड़ नहीं लगाते या घर की छत से छलांग नहीं मारते – केवल इसलिए क्योंकि हम जीवन को अनमोल समझते हैं, विशेषकर अपने जीवन को। परंतु आत्म–सुरक्षा जो हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने से रोकती है, वह अनुचित सुरक्षा है। यदि हमारी आत्म–सुरक्षा हमारे जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट से पहले स्थान लेती है और हमें आज्ञापालन से दूर रखती है, तब हम आत्मिक रीति से खतरनाक स्थिति में हैं। यह मैं की जड़ का प्रकटन है और इसे नष्ट किया जाना चाहिए। परमेश्वर के प्रति आज्ञापालन को बलि चढ़ाकर अपने जीवन, पद, सम्पत्ति या ख्याति की रक्षा की जाए, या विश्वास में कदम आगे बढ़ाने के लिए अनिच्छुक होना, इस बात का स्पष्ट संकेत है कि स्व या मैं प्रभुताकारी है और उसका सामना किया जाना चाहिए।

और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझताः कि उसे प्रिय जानूं, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पायी है (प्रे. काम 20:22–24)।

उदाहरण के लिए, हम बंगलूरू शहर के एक जवान व्यक्ति के विषय में विचार करें, जो प्रभु से प्रेम करता है। मान लीजिए कि इस जवान व्यक्ति को अमेरिका जाकर अच्छी शिक्षा पाने और अपने करियर में सफल होने का असवर प्राप्त होता है। इसके पास सबकुछ है – अच्छी नौकरी, रहने के लिए स्थान, वह विवाह करके वहां बसने पर है। भारत में उसके माता–पिता और दादा–दादी उसकी उपलब्धियों के

विषय में घमण्ड रखते हैं। ऐसे समय में, वह अपने जीवन में परमेश्वर की अगुवाई पहचानता है कि उसे वापस किसी स्थान में भारत देश जाना है और परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ करना है। यह जवान व्यक्ति तब अपने जीवन में एक महत्वपूर्ण क्षण में है। उसे निर्णय लेना है कि क्या वह प्रभु की आज्ञा मानेगा या अपने ही मार्ग के अनुसार चलेगा। यदि वह अमेरिका में रहने का चुनाव करता है – क्योंकि वह सोचता है कि ये संपूर्ण जीवन के लिए एक अच्छा अवसर है, इस असवर उसे नहीं छोड़ना चाहिए – तो यह आत्म–सुरक्षा की वजह से परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता होगी। परंतु, यदि यह जवान व्यक्ति जो कुछ उसके पास अमेरिका में है, उसे छोड़ देता है – सफलता, चैन आराम, उपलब्धियां, और बड़ा नाम – और भारत देश आने की ओर कदम बढ़ाकर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है और वही करता है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया है, तो यह खुद के लिए मर जाना है। परमेश्वर इस बात से अति प्रसन्न होगा!

मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है; जो इस जगत मे अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा (यूहन्ना 12:24,25)।

आत्म–सुरक्षा का मतलब हम खुद की रक्षा करें – अपने जीवनों की। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम अकेले रह जाते हैं। आत्म–सुरक्षा हमें फलवंत होने और बहुगुणित होने में रूकावट बनेगी – जो परमेश्वर हमारे जीवनों में चाहता है। आत्म–सुरक्षा की हमारी इच्छा – परमेश्वर की आज्ञापालन की बलि देकर अपनी सुरक्षा चाहना – हमें परमेश्वर के राज्य के लिए फलवंत होने और बहुगुणित होने से रोक रखेगी। केवल जब हम खुद के लिए मर जाएंगे, तभी हम सफल होंगे।

उदाहरण के लिए, मसीही सेवकाई में, हमें अपनी बड़ी ख्याति के लिए मर जाना है ताकि परमेश्वर अलौकिक में हमारा उपयोग करे।

जितनी बार हम खुद को आत्मा के अधीन करते हैं, और भविष्यद्वाणी में या आत्मा के वरदानों में कार्य करते हैं, उतनी बार हम खुद के लिए मरते हैं। विश्वास में कदम आगे बढ़ाने हेतु हमें खुद के लिए मरना है। हम पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं। हम अपने बड़े नाम को त्याग देते हैं क्योंकि यदि हम गलती करते हैं, तो हमें झूठे भविष्यद्वक्ता के नाम से पुकारा जाएगा! परंतु स्व को हटाकर रखने के लिए और कदम बढ़ाकर आत्मा में कार्य करने हेतु विश्वास की ज़रूरत है। परमेश्वर के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु उसके वरदानों को प्रवाहित होने की अनुमति देने के लिए विश्वास की ज़रूरत होती है। आत्मा में प्रवाहित होने के लिए, स्व के लिए मर जाना आवश्यक है। आत्म–रक्षा की प्रवृत्ति परिणामस्वरूप पवित्र आत्मा जो करना चाहता है, उसे सीमित करती है।

> जब हम खुद के विषय में, स्वयं के विषय में बोलते हैं, और अपना नाम बढ़ाना चाहते हैं और मनुष्यों की प्रशंसा की याचना करते हैं, तब हम अपनी महिमा खोजते हैं। जब हम सचमुच केवल परमेश्वर की महिमा चाहते हैं, और केवल उसी की महिमा की खोज में लगे रहते हैं, तब हमारे हृदय शुद्ध होते हैं और हम में कोई अधर्म नहीं पाया जाता।

दीनता (जब खुद को नीचे किया जाता है, तब अच्छा महसूस करना)

स्व का दूसरा प्रगटीकरण पिछले तीन प्रगटीकरणों के विपरीत महसूस होता होगा। यहां पर हम खुद को दीन बनाने के विषय को सम्बोधित कर रहे हैं। दीनता अत्यंत आवश्यक है। परंतु, दीनता का एक स्वरूप है जो सच्ची नम्रता के समान है, परंतु वास्तव में जो स्व से जन्मा है। इसे हम खुद को नीचे दिखाना या दीनता कह सकते हैं – ऐसी भावना जब लोग खुद को नीचे करते हैं। जब वे खुद के विषय में नीचता की बात करते हैं, जब बेचारे, हीन आदि होने के विषय में बोलते हैं, तब वे अच्छा महसूस करते हैं। उन्हें अच्छा महसूस होता है उन्हें बुरा लगता

है! वे सोचते हैं कि यह दीनता है और परमेश्वर इसके लिए उन्हें स्वीकार करता है! उदाहरण के तौर पर, जब हमारे द्वारा गाए गए किसी अच्छे गीत के लिए हमें बधाई दी जाती है, तो हमें उस बधाई को स्वीकार करने योग्य बनना है और हम गा भी सकते हैं इस बात का इन्कार करने के बजाए, हमें परमेश्वर को स्तुति देना है! यह झूठी नम्रता होगी जो मैं से भरी है। इसके बजाए, हमें बड़ी विनयशीलता के साथ प्रशंसा को स्वीकार करना है और परमेश्वर को महिमा देना है। यह आचरण करने का सही तरीका होगा।

यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है (2 कुरिं. 3:5)।

तौभी मैंने कहीं कहीं याद दिलाने के लिए तुम्हें जो बहुत हियाव करके लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है, कि मैं अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा याजक के समान करूं; जिससे अन्यजातियों का मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए। इसलिए उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूं। क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन, और कर्म, और चिन्हों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए, यहां तक कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया (रोमियों 15:15—19)।

हमें इस बात का पूरा अहसास है कि हमारी भरपूरी परमेश्वर की ओर से आती है, और हमें नम्रता का बहाना नहीं बनाना चाहिए जहां पर हम परमेश्वर द्वारा हमें दी गई योग्यताओं, संसाधनों, वरदानों, बुलाहटों और सेवाओं को मान्य करने से चूक जाते हैं। पौलुस ऐसा

व्यक्ति था जो हियाव के साथ बोलता था और उसे इस बात का अहसास था कि परमेश्वर ने उसे अपना सेवक होने के लिए बुलाया है। परमेश्वर ने उसके द्वारा जिन कामों को किया था, उसके विषय में वह घमण्ड रखता था। वह दीनता का झूठा पाखण्ड लिए नहीं फिरता था।

मूसा में दो विपरीत गुण थे। जब उसने पहले आरम्भ किया, तब उसे खुद पर बहुत भरोसा था। उसने फिरौन के महल में शिक्षा पाई थी। मूसा "शब्द और कामों में" महान था। जब उसने जाना कि परमेश्वर ने उसे इब्रानियों को मिस्र की गुलामी में से छुड़ाने के लिए बुलाया है, तब उसने सोचा कि वह अपने बलबूते पर ऐसा कर सकता है। वह अपने भरोसे के सहारे और खुद पर निर्भर होकर आगे बढ़ा (प्रे. काम 7:22–25)। परमेश्वर को उसके जीवन में कार्य करना पड़ा और अंत में मूसा जंगल में जा पहुंचा। चालीस साल बाद, वह इतना दीन हो गया कि परमेश्वर उससे जो करवाना चाहता था, उसे करने के लिए वह अनिच्छुक था और वह अपनी अयोग्यता के विषय में बहाने बनाने लगा। उसने परमेश्वर से बिनती की कि वह किसी और को भेजे। इससे परमेश्वर क्रोधित हुआ (निर्गमन 4:13–14)।

कभी कभी हमारी दीनता के दिखावे से परमेश्वर क्रोधित हो सकता है। शायद हम यह सोचते हैं कि हम नम्रता का व्यवहार कर रहे हैं, परंतु हम परमेश्वर को क्रोधित करते हैं। परमेश्वर ने जो कुछ हमें दिया है उसे स्वीकार करने की हमें ज़रूरत है और हम झूठी दीनता का दिखावा न करें। झूठी दीनता की जड़ पर कुल्हाड़ा रखें और परमेश्वर पर भरोसा करें!

खुद के लिए मर जाना – पौलुस की गवाही

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया (गलातियों 2:20)।

क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है (फिलिप्पियों 1:21)।

परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है (फिलिप्पियों 3:7)।

क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा, तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे भविष्य में अपने लिए न जीएं, परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा (2 कुरिं. 5:14,15)।

मसीही होने के नाते, अब हम स्वयं के लिए नहीं जीते। हम उसके लिए जीते हैं जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए मर गया। "अब मैं नहीं, परंतु मसीह जो मुझमें जीवित है" यह हमारा विषय है। इसका अर्थ यह है कि हम मैं – स्वार्थपूर्ण अभिलाषाएं, स्वार्थपूर्ण महत्वाकाक्षांएं, खुद को बढ़ावा देना, आत्म–सुरक्षा आदि – को हटाकर रखने के लिए तैयार हैं – और उन बातों को करने का चुनाव करें जो प्रभु चाहता है कि हम करें।

हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की सोंह जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं, कि मैं प्रतिदिन मरता हूं। यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन–पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाए–पीए, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे (1 कुरिं. 15:31,32)।

पौलुस ने कहा, "मैं प्रतिदिन मरता हूं।" उसने क्रूसित जीवन व्यतीत किया। यह सच था कि प्रतिदिन उसका जीवन खतरे में था और वह अपने सताने वालों के कारण मृत्यु के करीब था। फिर भी जो जीवन उसने व्यतीत किया वह क्रूसित जीवन था। खुद के लिए मरना एक बार की घटना नहीं है। हमें प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना है (लूका

9:23) क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करते, तो हम मसीह के शिष्य नहीं बन सकते (लूका 14:27)।

> आत्म–सुरक्षा की हमारी इच्छा – परमेश्वर की आज्ञापालन की बलि देकर अपनी सुरक्षा चाहना – हमें परमेश्वर के राज्य के लिए फलवंत होने और बहुगुणित होने से रोक रखेगी।

अपना क्रूस उठाने का क्या अर्थ है? कभी कभी अपना क्रूस उठाने के विषय में बोलते समय लोग ऐसे व्यक्ति के विषय में विचार करने लगते हैं जिसने संसार को त्याग दिया है और ऐसे जीता है मानो वह कोई तपस्वी हो। परंतु "क्रूस उठाने" का सम्बंध हम बाहरी तौर पर जो कुछ हैं उससे होने के बजाए, हम जो अंदर से हैं, उससे है। क्रूस मृत्यु का स्थान है – खुद के लिए मर जाना। कोई व्यक्ति बिना किसी भौतिक सुख–सुविधा के किसी झोपड़े में रहता है, फिर भी हठीला, आत्म–केंद्रित, मनमानी चलने वाला, अपनी स्वार्थपूर्ण अभिलाषाओं का पीछा करने वाला और खुद को बढ़ावा देने की चाह रखने वाला हो सकता है। यदि ऐसा है, तो यह वास्तव में "क्रूस उठाना" नहीं हुआ। दूसरा व्यक्ति अच्छे घर में रह सकता है, अच्छी कार चला सकता है, फिर भी स्व के लिए सचमुच मर सकता है। उसमें एक दीन स्वभाव होता है जो मैं से मुक्त है। इसलिए "क्रूस उठाना" और "खुद के लिए मर जाना" इन बातों का सम्बंध बाहरी भक्तिमानता और धार्मिकता से नहीं, परंतु हमारी अंतर्रात्मा में हम जो कुछ हैं, उससे है।

क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं (2 कुरिं. 4:5)।

हम किसका प्रचार कर रहे हैं, किसे बढ़ावा दे रहे हैं और किसकी महिमा कर रहे हैं? क्या हमें या यीशु को? सबके अंत में, लोग यीशु के बजाए हमारे बारे में बात करते हैं, तब हुआ यह कि हमने सचमुच

मसीह का प्रचार नहीं किया। यदि लोग यीशु की ओर खींचे जाने के बजाए हमारी ओर आकर्षित होते हैं, तब हमने सचमुच मसीह का प्रचार नहीं किया।

प्रतिदिन के जीवन में इसे लागू करना

घर में पति या पत्नी के रूप में

जितनी बार हम अपने अधिकारों को त्यागते हैं, उदाहरण के लिए, सेवा पाने का हमारा अधिकार, दूसरे हमारी सुनें यह अधिकार – उतनी बार हम खुद के लिए मरते हैं।

बदले में बिना किसी बात की अपेक्षा किए देने की योग्यता का विकास करें (लूका 6:30)।

बदला लेने के बजाए, क्षमा करने की योग्यता का विकास करें। पलटकर वार न करें।

बदले में कुछ पाने की आशा किए बगैर प्रेम करना सीखें। ये कहने पाएं, "तुम मुझसे प्रेम नहीं करते, फिर भी मैं तुमसे प्रेम करता हूं।" यह सच्चा अगापे प्रेम है! अगापे प्रेम अपनी प्रेम की टंकी नियमित भरने पर निर्भर नहीं रहता। अगापे प्रेम का उगम परमेश्वर में होता है और उसकी एक ही प्रेम भाषा होती है – बदले में कुछ पाने की अपेक्षा किए बगैर प्रेम करना। अगापे प्रेम आप जो देते हैं, जो छूते हैं, प्रशंसा के शब्द या ऐसी बातों पर निर्भर नहीं होता। ये सारी बातें करना अच्छा है और उन्हें किया जाना चाहिए, परंतु याद रखें हमें परमेश्वर तरह के विश्वास में चलने हेतु बुलाया गया है! इस प्रकार का प्रेम बदले में कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करता।

घर में – माता–पिता के रूप में

हमें अपने स्वार्थपूर्ण स्वप्नों को बच्चों पर नहीं लादना चाहिए। हमें परमेश्वर की सुनने का साहस होना चाहिए और अपने बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने जीवनों में परमेश्वर की अनोखी

बुलाहट का अनुसरण करें। हमें अपने बच्चों के जीवनों के माध्यम से अपने सपनों को पूरा करने की गलती करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। हम अपने बच्चों को उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के स्वप्नों को पूरा करने की अनुमति दें। हमें हमारे बच्चों के द्वारा दूसरा जीवन जीने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

घर में – बच्चों के रूप में –

हठीले और विद्रोही न बनें। आज्ञा मानना सीखने के द्वारा स्व के लिए मर जाएं।

अपनी ज़रूरतों में और भावनाओं में व्यस्त रहने के बजाए, अपने माता–पिता की भावनाओं और ज़रूरतों का विचार करें।

घर/कॉलेज में (जवान)

अपने साथियों के प्रति प्रेम का बर्ताव करें। बदला लेने के बजाए प्रेम करें और क्षमा करें।

किसी और के लिए अपने अवसरों को त्याग दें। उस अवसर को बीज के रूप में बोएं और अपने प्रतिफल के लिए परमेश्वर पर विश्वास करें।

काम के स्थान पर

अपनी ही कल्पनाओं और विचारों का आग्रह करने के बजाए, हम अधीन होना सीखें।

अपने दोष कबूल करें। हम गलत थे यह कहने से न डरें। हम क्षमा मांगने की हिम्मत रखें। जब हम अपने घमण्ड को नाश करते हैं, तब हम खुद के प्रति हज़ारों मौत मरते हैं।

कलीसिया में

हम पद, प्रमुखता, और मान्यता के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा न करें। जो कुछ हम करते हैं, हम निःस्वार्थ सेवक के भाव से करें। हम याद

रखें कि यदि हम खुद को ऊंचा उठाने की कोशिश करते हैं, तो हम नीचे किए जाएंगे, परंतु यदि हम खुद को दीन बनाएंगे, तो हम ऊंचा स्थान पाएंगे (लूका 14:7–11)।

हम खुद को, अपने गुणों, वरदानों, अभिषेक या बुलाहट को बढ़ावा देने की कोशिश न करें। हम जो कुछ कहते और करते हैं उसमें केवल यीशु को महिमा दे।

सुनें जाने, देखे जाने, प्रशंसा पाने और मान्यता पाने की हमारी इच्छा मार दी जाए। हम खुद के महत्व की ज़रूरत को इन्कार करें। हमारें जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर को प्रथम स्थान मिले।

अलौकिक संसार में परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने हेतु हमारी प्रतिष्ठाओं को हम ताक पर रखें।

सेवकाई में –

जिन पतियों को सेवकाई में बुलाया गया है वे अपने पत्नियों पर उनके जीवन की बुलाहट को त्यागकर अपनी सेवकाई में आने हेतु जबरदस्ती न करें, विशेषकर यदि वे सेवकाई में बुलाहट को महसूस नहीं करते हैं तो। ऐसा करना स्वार्थपूर्ण होगा। इसके बजाए, पत्नियों को उनके जीवनों पर परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करने की अनुमति व प्रोत्साहन देना चाहिए, भले ही वह व्यावसायिक विश्व में क्यों न हो।

जब हम, जो भौतिक सुख–सुविधाओं के आदि है, देहातों में सेवा करने जाते हैं, तब हमें प्रदान की गई सुविधाओं के साथ अनुकुलन करना चाहिए और संतुष्ट रहना चाहिए। हम सुविधाओं को न मांगें। भले ही हमारे शरीर के लिए यह कठिन होगा, परंतु यह स्वयं के लिए मरने का अच्छा अवसर है।

पश्चाताप और स्वयं के लिए मर जाना

यदि हमें परमेश्वर में ऊंचे क्षेत्र में सफर करना है, तो हमें उन बातों से दूर होने के लिए तैयार रहना है जो हमें वहां जाने से रोकती हैं। हमें ऐसी स्थिति में आना है जहां पर हम स्व से दूर हो जाएंगे। यदि हम स्व में बने रहना जारी रखते हैं, तो हम परमेश्वर को योग्य महिमा नहीं दे सकते। "ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए" (1 कुरिं. 1:29)। हम यूहन्ना बपतिस्मा करनेवाले के समान बनें और यह कहने के लिए तैयार हों, "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं" (यूहन्ना 3:30)। हम परमेश्वर को अनुमति दें कि वह हमारे अंतर्मन के विचारों को देखे और जांचे कि हमारे कार्य कहीं स्वार्थ से प्रेरित तो नहीं। "हे ईश्वर, मुझं जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझे में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!" (भजन 139:23,24) हम अपने मकसद को जांचें। यदि हमारा मकसद खुद की तरक्की, स्वार्थपूर्ण अभिलाषा और आत्म–सुरक्षा है, तो हम खुद को रोकें। हमारे जीवनों में स्वार्थ की जड़ों को मिटाएं बगैर हम आगे बढ़ने का प्रयास भी न करें। हम प्रभु से बिनती करें कि वह हमारे ह्रदयों को बदल दे।

हम स्व – स्वार्थ की जड़ को दूर करें; गलत इरादों को, महत्व, स्वार्थपूर्ण अभिलाषा और खुद की भलाई खोजने की हमारी इच्छा को क्रूस पर चढ़ाएं। हम परमेश्वर के सामने पारदर्शी रहें और पवित्र आत्मा को अनुमति दें कि हम हमारे जीवनों में शुद्धिकरण का कार्य करें।

प्रार्थना

पिता, मैं कबूल करता हूं कि मेरे इरादे हमेशा शुद्ध नहीं रहे हैं। कई बार मैंने खुद को बढ़ावा देने की चाह रखी। कई बार मैंने उस महिमा को छुआ जो केवल आपकी थी। कई बार मैं मेरे लिए आपकी योजनाओं और उद्देश्यों को अंगीकार करने से चूक गया और इसके बजाए मैंने अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश की।

पिताजी, मैं स्व से मुक्त जीवन बिताना चाहता हूं। प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे जीवन के स्वार्थ पर कुल्हाडी मारें। स्व के प्रति मर जाने हेतु और आपके लिए जीने हेतु मेरी सहायता करें।।

मेरे इरादों को शुद्ध करें। मुझे अनुग्रह दें। मैं खुद को नम्र करूं, यह जानते हुए कि आप उचित समय पर मुझे उठाएंगे। मैं मनुष्यों की प्रशंसा पाने की कोशिश न करूं, परंतु केवल आपकी ओर से आनेवाले सम्मान की चाह रखूं।

पिताजी, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आप अपनी आत्मा के द्वारा मेरे जीवन में कार्य कर रहे हैं। यीशु के नाम में, आमेन।

जड़ पर
कुल्हाड़ा
मारना
मैं • ईर्ष्या • घमंड • वासना

2
ईर्ष्या की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना

ईर्ष्या के लिए दूसरा शब्द है, जलन. जीवन में कुछ ऐसी बातें हो सकती हैं जो हमारे लिए खतरनाक हो सकती हैं और उनमें से एक है ईर्ष्या। हममें से कई लोग इस बात को समझ नही पाते कि यह कितनी गंभीर हो सकती है। हम इसे व्यक्तित्व का संघर्ष कहकर खारिज़ कर देते हैं। तथापि यह उससे अधिक है और गंभीरता के साथ उसका सामना करने की ज़रूरत है। इस अध्याय में, हम यह समझना चाहते हैं कि ईर्ष्या क्या है, उसकी गंभीरता और फिर उससे कैसे निपटा जाए। ईर्ष्या क्या है इसे स्पष्टता के साथ समझने में परमेश्वर का वचन हमारी मदद करेगा। हमें पवित्र आत्मा को अनुमति देना है कि वह ईर्ष्या की जड़ को खींच निकाले ताकि हममें से हर एक उससे आज़ाद हो सके।

शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे (गलतियों 5:19–21)।

उपर्युक्त पदों में ईर्ष्या और जलन दोनों का उल्लेख किया गया है। इनकी गंभीरता को हम तब पहचानते हैं जब हम पढ़ते हैं कि जो ईर्ष्या और जलन रखते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि जो उसमें बने रहते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। यह एक अत्यंत गंभीर बात है, अतः हमें इसका सामना करना होगा।

हमारी भेंट ईर्ष्या से हर जगह होती है – भाई–बहनों में, पति और पत्नियों में, कर्मचारियों में और नियोक्ता में आदि। मित्रों और साथियों

के मध्य भी ईर्ष्या हो सकती है। ईर्ष्या कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के मध्य पाई जाती है और परमेश्वर के सेवकों के मध्य भी।

ईर्ष्या का सामना करना ज़रूरी है

वरन् अब तक शारीरिक हो, इसलिए कि जब तुममें डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? (1 कुरिं. 3:3)।

पौलुस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अन्य भाषा बोलने वाले मसीहियों से बातें कर रहा था – जो आत्मा में कार्य करने के विषय में जानते हैं – और वह उन्हें "शारीरिक" कहता है क्योंकि उनके मध्य ईर्ष्या, लड़ाई–झगड़े और जलन की भावना थी। ये लोग अब भी शरीर के चलाए चल रहे थे।

कई तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कई भली मनसा से। और कई एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाने हैं, यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करें (फिलिप्पियों 1:15,17)।

पौलुस यह दर्शाता है कि मसीह का प्रचार करने जैसा आत्मिक कार्य भी जलन से किया जा सकता है। यद्यपि मसीह का प्रचार करना सही बात है, परंतु जब यह कार्य ईर्ष्या या जलन से प्रेरित होता है, तब वह परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं होता। कोई और टी. व्ही. पर प्रचार कर रहा है, यह देख यदि कोई प्रचारक टी. व्ही. पर प्रचार करता है, तो उसका मकसद गलत है। परमेश्वर के लिए उत्साही होने के बावजूद, यदि जल की भावना मकसद है, तब यह अत्यंत खतरनाक बात है। जलन शरीर का कार्य है और जो कुछ जलन की भावना से प्रेरित होकर किया गया है – फिर वह चाहे जितना आत्मिक कार्य हो, वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता क्योंकि रोमियों 8:8 में लिखा है, "और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।"

गिनती 5:14 यह पद पति और पत्नी के मध्य जलन की भावना के विषय में बोलता है। (इस प्रकार, जलन जब ईर्ष्या की भावना से प्रेरित होती है, तब वह शैतानी हो सकती है।)

बाइबल में जलन की भावना

बाइबल में जलन की भावना के कई उदाहरण हैं।

कैन और हाबिल

कैन और हाबिल के व्यवसाय अलग अलग थे। कैन किसान था और हाबिल चरवाहा। दोनों ने परमेश्वर के लिए भेंट लाई। कैन ने भूमि की उपज लाई और हाबिल ने जानवर को बलि के रूप में चढ़ाया। प्रभु ने हाबिल की भेंट को स्वीकार किया जिसकी वजह से कैन के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई। बाइबल कहती है कि कैन क्रोधित हुआ और जलन से भर गया और परिणामस्वरूप उसने अपने भाई की हत्या कर दी (उत्पत्ति 4:1–9)।

यूसुफ और उसके भाई

यद्यपि याकूब के 12 पुत्र थे, फिर भी वह यूसुफ से सर्वाधिक प्रेम करता था, जिसकी वजह से भाइयों के बीच जलन उत्पन्न हुई। माता–पिता के लिए यह एक चेतावनी होनी चाहिए कि वे इस बात का ध्यान रखें कि वे अपने बच्चों के साथ पक्षपातरहित आचरण करें और किसी एक के प्रति अपनी पसंदगी न जताएं, क्योंकि इससे भाइयों के बीच जलन की भावना उत्पन्न हो सकती है। याकूब ने यूसुफ के लिए रंगबिरंगी पोशाक बनवाई। इसके अलावा, यूसुफ ने स्वप्न देखे जिससे यह प्रगट हुआ कि वह आदर का पद पाएगा। इन सारी बातों की वजह से यूसुफ के भाई उससे जलन रखने लगे, और वे उसकी हत्या करने का विचार करने लगे। ईश्वरीय हस्तक्षेप के द्वारा, यूसुफ को मिस्र देश लाया गया (उत्पत्ति 37:3,4,8; प्रे.काम 7:9)।

शाऊल और दाऊद

1 शमुएल 18:5–30 में वर्णन किया गया है कि राजा शाऊल और दाऊद के मध्य जलन उत्पन्न हुई। दाऊद एक चरवाहा था, फिर भी उसने परमेश्वर की सहायता से गोलियत की हत्या की। जब दाऊद युद्ध भूमि से लौट आया, तब लोग दाऊद और शाऊल की प्रशंसा के गीत गाने लगे। उन्होंने कहा कि शाऊल ने मात्र हज़ारों को मारा, परंतु दाऊद ने दस हज़ारों को मारा। शाऊल जलन से भर गया क्योंकि लोगों ने दाऊद को उससे अधिक आदर प्रदान किया था। शाऊल के हृदय में जलन के पहले बीज थे जिसकी वजह से वह ऐसे स्थान पर आया जहां पर वह अंततः दाऊद को मार डालना चाहता था। शाऊल दाऊद को मारने की योजना बनाने लगा। उसने दाऊद को अपनी सेना का कप्तान बनाया ताकि वह युद्ध भूमि में आगे रहे। इस बात का ध्यान रखने के लिए कि दाऊद मारा जाए, उसने हज़ार फिलिस्तीनों को मारने के बदले में उसे विवाह में अपनी बेटी देने की पेशकश की।

कुछ लोगों को काम के स्थानों पर जलन का सामना करना पड़ता है। जो प्रबंधक उनका अधिकारी होता है, वह उनके जीवन में "राजा शाऊल" हो सकता है। प्रबंधक इस बात से असुरक्षित महसूस करता है कि उसका मातहत अधिकारी उत्तम काम करता है या उसे डर होता है कि मातहत अधिकारी उसके काम को उसके हाथ से छीन ले। परिणामस्वरूप, प्रबंधक के दिल में ईर्ष्या की भावना जन्म लेती है। इस ईर्ष्या की वजह से, प्रबंधक आहत हो जाता है या वह उग्रता का व्यवहार करने लगता है, और उसके अधीनस्थ कर्मचारी सोचने लगता है कि उनकी क्या गलती है।

1 शमुएल 18 में हम बार बार देखते हैं कि दाऊद ने बुद्धिमानी का आचरण किया। उसने बदला नहीं लिया या शाऊल को अपने स्थान पर रखने की ज़रूरत महसूस नहीं की। इसके बजाए उसने बुद्धिमानी का व्यवहार किया और परमेश्वर ने हस्तक्षेप कर उस परिस्थिति को अपने काबू में लिया। यदि आपके काम के स्थान पर आपको ईर्ष्या का

सामना करना पड़ता है, तो बदला न लेना बुद्धिमानी का काम है। केवल बुद्धिमानी के साथ व्यवहार करें। परमेश्वर को हस्तक्षेप करने दें – वह अवश्य करेगा!

> जलन शरीर का कार्य है और जो कुछ जलन की भावना से प्रेरित होकर किया गया है – फिर वह भले ही आत्मिक कार्य हो, वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता क्योंकि रोमियों 8:8 में लिखा है, "और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।"

जलन की भावना का सामना करना

जलन की भावना का सामना करने का प्रयास करने से पहले, हमें यह कबूल करना होगा कि हमारे हृदय में जलन की भावना है। अधिकतर लोग अपने हृदय की जलन को छिपाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई मित्र हमें बताता है कि उसने एक कार खरीदी है, जो हम सोचते हैं कि हमारी कार से बेहतर है, तो हम ईर्ष्या से भर जाते हैं। सही बात यह होगी कि हम यह कबूल करें कि हम में जलन है, और उसे त्याग दें, यह कहकर उसे छिपाने के बजाए कि, "परमेश्वर की स्तुति हो, भाई," बिना इसे गंभीरता से कहे या उसके साथ आनंद मनाने के बजाए। इन्कार से बाहर निकलना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। इन्कार के साथ अपनी जलन की भावना को छिपाने से हम समस्या का हल नहीं कर पाएंगे। इसके बजाए हमें परमेश्वर के सामने पारदर्शिता रखनी चाहिए। हम परमेश्वर से बिनती कर सकते हैं कि हमें इससे छुटकारा पाने में मदद करे और वह करेगा। परंतु यदि हम इन्कार करते रहे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के हस्तक्षेप के द्वार बंद हो जाते हैं और परमेश्वर कुछ नहीं कर सकता।

जलन की भावना का प्रदर्शन

हत्या

जलन की वजह से कैन ने हाबिल की हत्या की (उत्पत्ति 4:8)। यद्यपि हम में से अधिकतर लोग तुरंत यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हम में कैन

की खूनी भावनाएं नहीं हैं, फिर भी निम्नलिखित पद हमें इस बात पर दोबारा विचार करने पर मज़बूर करेंगे!

"तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर बिना वजह क्रोध करेगा, वह कचहरी के दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई उसे कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा" (मत्ती 5:21,22)।

जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता (1 यूहन्ना 3:15)।

यीशु ने कहा कि यदि हम बिना किसी वजह से किसी से क्रोधित होते हैं, तो हम हत्यारे हैं। जब मैं दूसरे व्यक्ति से नफ़रत करता हूं, तो मैं हत्यारा हूं।

क्रोध की अभिव्यक्ति

क्योंकि जलन से पुरुष बहुत ही क्रोधित हो जाता है, और पलटा लेने के दिन वह कुछ कोमलता नहीं दिखाता (नीतिवचन 6:34)।

यहां संदर्भ उस पत्नी का है जिसने व्यभिचार किया है और उसका पति क्रोधित है। जलन ने इस पति को क्रोधित किया। अन्य परिस्थितियां भी हो सकती हैं, जहां पर जलन की वजह से पति क्रोधित हो उठता है। अक्सर, क्रोध की अभिव्यक्ति जलन की जड़ की वजह से हो सकती है। पति और पत्नियों को अपने जीवनसाथी के प्रति खुद को जांचने की ज़रूरत है। शायद क्रोध की अभिव्यक्ति का मूल कारण जलन है। जलन की आग को इस बात से ईंधन मिलता है कि पत्नी पति से कुछ हज़ार रुपये अधिक कमाती है और पति उसकी बराबरी करने का प्रयास करता है। यह हीनता की भावना की लम्बे

समय से पति के दिल में पनपती रहती है और अचानक वह क्रोध के रूप में प्रगट होती है।

जब हम सार्वजनिक सभा में इकट्ठा होते हैं, तब हम बड़े ज़ोर–शोर से परमेश्वर की आराधना करते हैं, परंतु यहां पर कुछ सवाल पूछे जाने चाहिए, हम अपने घरों की चारहदिवारी में कैसे बर्ताव करते हैं? हम अपने जीवनसाथी के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? घर की परिस्थितियों के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होती है? इन प्रश्नों के उत्तर जलन की जड़ या अस्तित्व को दर्शाती है!

बदला लेने का प्रयास करना

हे प्रियो, अपना पलटा न लेना, परन्तु क्रोध को अवसर दो; क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि मेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो (रोमियों 12:19–21)।

बाइबल हमसे कहती है कि हम बदला न लें। यह विचार 1 थिस्सल. 5:15 में व्यक्त किया गया है, "कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो। आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो।"

हम बदला लेने का सुसंस्कृत तरीका अपना सकते हैं। हमारे कार्य प्रत्यक्ष रूप से बदला लेने वाले न हों। फिर भी, हम अपने हृदयों को परमेश्वर से छिपा नहीं सकते। घर में, हम बात करने से इन्कार कर सकते हैं, एक प्याला कॉफी लेने से या घर में किसी का बदला लेने हेतु कपड़े प्रेस करने से इन्कार कर सकते हैं; काम के स्थान पर हम दूसरों से कोई महत्वपूर्ण जानकारी छिपाकर रख सकते हैं – इस प्रकार का आचरण वचन के प्रचारकों और पासबानों में भी पाया जाता है। उदाहरण के तौर पर, हो सकता है कि किसी साथी पासबान ने

किसी पास्टर को सभा के लिए निमंत्रित किया हो और वह महसूस करता है कि उसे सभा में पर्याप्त सम्मान नहीं दिया गया। इसलिए बदला लेने की भावना से यह पासबान जिसने आहत महसूस किया है, खामोशी से परमेश्वर के उस सेवक को जिसका आयोजन उसने किया है निमंत्रण देगा और धीरे से उसके साथ ही वैसा ही, बल्कि और बुरा बर्ताव करेगा; इस प्रकार के आचरण का मूल कारण ईर्ष्या या जलन की आत्मा है।

निर्दयता, दुर्भावना और क्रोध

क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु जब कोई जल उठता है, तब कौर ठहर सकता है? (नीतिवचन 27:4)।

यदि क्रोध क्रूरतापूर्ण है, तब जलन दुगुनी क्रूरता है। लोगों के प्रति निर्दयी या क्रोधी होना कभी कभी जलन की वजह से होता है। श्रेष्ठगीत 8:6ब में लिखा है, "प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है, और ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है; उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है, वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है।" ईर्ष्या या जलन कब्र के समान क्रूर है। अतः कभी कभी लोगों के प्रति उग्र एवं निर्दयी आचरण जलन की वजह से होता है। हमें केवल आचरण बदलने का प्रयास नहीं करना है, वरन् उसके मूल कारण को मिटाने की कोशिश करना है। भाई—बहनों के बीच निर्दयता का मूल कारण जलन की वजह से हो सकता है।

विभाजन या फूट

इसका कारण भी जलन है। एक व्यक्ति के हृदय में जलन होने की वजह से कई विभाजन हुए हैं। अंततः यह फैल जाता है और उसका परिणाम लड़ाई—झगड़ा और फूट में होता है।

अत्याधिक प्रतिस्पर्धा

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सही समय में अच्छी होती है। उदाहरण के तौर पर, खेल के मैदान में होड़ की भावना रखना और विजय की कामना करना उचित है। आप सर्वोत्तम प्रयास लगाने की और दूसरों से आगे बढ़ने

की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा अच्छी बात है और हमें उत्तमता हासिल करने योग्य बनाती है। परंतु कई बार हम यह गलती कर बैठते हैं कि, हम इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा को परमेश्वर के भवन में ले आते हैं और गड़बड़ी पैदा कर देते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति दूसरे से अधिक लम्बे समय का उपवास रखता है – और उसका मकसद केवल प्रतिस्पर्धा की भावना होती है। दूसरा व्यक्ति जो कुछ कर रहा है, उससे हम कुछ बड़ा काम करना चाहते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में अत्याधिक होड़ की भावना हमें बाहरी तौर पर ऊंचे आत्मिक लक्ष्य तक ले जाएगी। परंतु, यह परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नतादायक नहीं है क्योंकि वह ईर्ष्या से प्रेरित है।

झगड़े और विवाद

नीतिवचन 10:12 में हम देखते हैं कि, "बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं।" और यह बैर या नफरत जलन की वजह से उत्पन्न होता है जिसका परिणाम झगड़ा होता है।

अलगाव, स्वतंत्रता और असुरक्षितता

जलन या ईर्ष्या असुरक्षा को उत्पन्न करती है और व्यक्ति को दूसरों से अलग और स्वतंत्र बना देती है। उदाहरण के लिए, कुछ पासबान अपनी मंडली से कहते हैं कि वे अन्य सेवकों, सेवकाइयों और अन्य विश्वासियों से भी दूर रहें। यह अक्सर असुरक्षा की भावना से होता है जो ईर्ष्या से उत्पन्न होती है। परमेश्वर के लोगों को अन्य सेवकों से और दूसरे विश्वासियों की संगति से प्राप्त करने की आज़ादी होनी चाहिए जो उन्हीं की स्थानीय कलीसिया नहीं है।

अति–सुरक्षा

कभी कभी ऐसा लगता है कि व्यक्ति बहुत अधिक ध्यान रख रहा है, परंतु वह अति–सुरक्षा की वजह से होता है और जलन के कारण उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, पति अपनी व्यावसायिक दृष्टि से कौशल प्राप्त पत्नी को इस बहाने से घर में रखने हेतु समझाता है कि वह पूरे परिवार की ज़रूरतों का ध्यान रखेगा। परंतु, यह अति–सुरक्षा

का कारण जलन का मूल है जहां पर पति वास्तव में अपनी पत्नी से ईर्ष्या रखता है। संभवतः वह इस बात से जलन रखता है कि काम के स्थान पर उसकी पत्नी अन्य पुरुषों के साथ संपर्क रखेगी। शायद वह इसलिए असुरक्षित है कि कहीं वह उससे अधिक आमदनी प्राप्त न करे।

क्षुद्रता

अक्सर, जब छोटी छोटी बातें बढ़ जाती हैं और राई का पहाड़ बन जाता है, तो इसका मूल कारण जलन हो सकता है।

> आध्यात्मिक क्षेत्र में अत्याधिक होड़ की भावना हमें बाहरी तौर पर ऊंचे आत्मिक लक्ष्य तक ले जाएगी। परंतु, ये परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नतादायक नहीं है क्योंकि वह ईर्ष्या से प्रेरित है।

जलन का परिणाम

हमारे हृदयों में जलन को रहने की अनुमति देने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जब हम जलन के परिणामों को समझेंगे, तब हम जलन के जड़ पर अपना कुल्हाड़ा मारने तैयार हो जाएंगे!

जलन विनाशकारी हो सकती है

जलन मार डालती है! “मूढ़ खेद करते करते नाश हो जाता है, और भोला जलते जलते मर जाता है” (अय्यूब 5:2)। हम अधिक समय तक बिना हानि पाए ईर्ष्या में बने नहीं रह सकते। ईर्ष्या धीरे धीरे उस व्यक्ति को बर्बाद कर देती है जिसमें वह वास करती है।

जलन की भावना हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है

“शांत मन तन का जीवन है, परंतु मन के जलने से हड्डियां भी जल जाती हैं” (नीतिवचन 14:30)। हृदय में जलन की भावना हमारे शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ को प्रभावित करती है। कभी कभी, जब लोग शारीरिक रोग से पीड़ित होते हैं, तब मूल कारण जलन हो सकता है।

जलन की भावना हमारी दृष्टि को धुंधला बना देती है, और हमारे लक्ष्य के खोने का कारण बनती है

जलन की भावना हमारी दृष्टि को धुंधला बना देती है, हमारे लक्ष्य खोने का कारण बनती है और हमारा ध्यान विचलित कर देती है। "तू पापियों के विषय में डाह न करना; दिनभर यहोवा का भय मानते रहना" (नीतिवचन 23:17)। उदाहरण के तौर पर, काम के स्थान पर, जब हम लोगों को देखते हैं जिनमें परमेश्वर का भय नहीं है और फिर भी उन्नति करते हैं, तब हमें सावधान रहना है कि हम उनसे ईर्ष्या न रखें। परंतु अधर्मी बाहरी तौर पर सम्पन्न लोगों से जलन रखने की वजह से हम अपने लक्ष्य को खो देते हैं।

जलन की भावना हमें बांध देती है और रोशनी देखने से हमें रोकती है

जलन ही एक मुख्य कारण था जिसकी वजह से यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। महायाजक यीशु से ईर्ष्या रखता था। "पीलातुस ने उनको यह उत्तर दिया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूं? क्योंकि वह जानता था कि महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था" (मरकुस 15:9,10)। यीशु को जो ख्याति मिली थी और जो आश्चर्यकर्म उसने किए थे, उनकी वजह से महायाजक यीशु से ईर्ष्या करने लगे। ईर्ष्या या जलन ने उनके हृदय को बांध दिया और वे यीशु को मसीह के रूप में पहचान न सके।

जलन मुश्किलें खड़ा करती है

सब से मेल मिलाप रखें, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। और ध्यान से देखते रहो ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं (इब्रानियों 12:14—15)।

यदि हम कड़वाहट और जलन की जड़ के विषय में सावधान न रहें तो वह न केवल हमें प्रभावित करेगी, परंतु हमारे आसपास के लोगों

पर भी असर डालेगी। जिस क्षण हम महसूस करते हैं कि हम में जलन की भावना है, उसी क्षण हमें उसका सामना करने की ज़रूरत है।

ईर्ष्या और झगड़े उलझन और हर शैतानी कार्य के लिए द्वार खोल देती है।

बाइबल कहती है कि जहां पर जलन होती है, वहां पर दो घातक बातें होती हैं – उलझन और हर बुरा काम।

परंतु यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। इसलिए कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है (याकूब 3:14–16)।

जलन की भावना उलझन और हर प्रकार के शैतानी कार्य के लिए द्वार खोलती है। कभी कभी, जब लोग छुटकारा पाना चाहते हैं और प्रार्थना के लिए निवेदन देते हैं, तब स्थायी समाधान अनुभव नहीं किया जाता क्योंकि लोग शैतानी कार्य के लिए अपने द्वार खुले रखते हैं। द्वार बंद रहे इसलिए समस्या की जड़ को मिटाना होगा। जब तक हमारे हृदयों में जलन की भावना होगी, तब तक उलझन और हर प्रकार के शैतानी कार्य खुले द्वार से हमारे जीवन में प्रवेश कर पाएंगे।

इस प्रकार, जलन एक गंभीर बात है। यह हमारे शरीर को प्रभावित करती है और सच्चाई के लिए हमारी आंखों को धुंधला बना देती है और हम अपना लक्ष्य खो बैठते हैं, इस वजह से मुश्किल उत्पन्न होती है और हर प्रकार के दुष्टात्मा के कार्य के लिए द्वार खुल जाता है।

जलन की भावना से छुटकारा पाना

लोग जलन का सामना करते हुए उससे कैसे मुक्त रह सकते हैं? बाइबल हमें सिखाती है :

प्रेम में चलें

प्रेम ईर्ष्या नहीं करता (1 कुरिं. 13:4)। हम में से हर एक के पास विश्वासी होने के नाते परमेश्वर के प्रेम में चलने की योग्यता है क्योंकि "परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में उण्डेला गया है" (रोमियों 5:5)। प्रार्थना करें और निर्णय लें कि परमेश्वर का प्रेम आपके जीवन के द्वारा बह सके और उस व्यक्ति के प्रति भी जिसके विषय में आप जलन महसूस करते हैं। खुद से कहें, "मैं अपने मित्र के प्रति प्रेम में चलने का चुनाव करूंगा।" परमेश्वर के प्रेम में चलना जलन की भावना को आपके हृदय और मन से दूर रखेगा।

दूसरों की आशीषों में आनन्दित हों

जो आनन्द मनाते हैं उनके साथ आनन्द मनाने के लिए हमें बुलाया गया है (रोमियों 12:15)। उस मित्र के साथ आनन्द मनाएं जिसने शायद नई कार खरीदी है। उस व्यक्ति के साथ आनन्द मनाएं जिसने विशेष प्रयोजन या आश्चर्यकर्म पाया है। अक्सर हम गाते हैं, "कितना महान!" और जाहिर करते हैं कि परमेश्वर वह है जिसने तारों को बनाया, बादल की गर्जन आदि की सृष्टि की। परंतु जब हम किसी मित्र को नई कार खरीदकर आशीष पाते हुए देखते हैं या अन्य व्यक्ति के जीवन में आश्चर्यकर्म आदि देखते हैं, तब हमें यह गाना भी सीखना है, "कितना महान!" वही परमेश्वर कार्य करता है! हमें दूसरों की आशीषों में आनन्दित होना सीखना है!

हम घमण्डी होकर एक दूसरे को न छेड़ें, और न ही एक दूसरे से डाह करें (गलातियों 5:26)।

> जब तक हमारे जीवनों में जलन की भावना है, तब तक हर प्रकार की उलझन और शैतानी कार्य हमारे जीवन में आसानी से प्रवेश कर पाएंगे।

हम में से हर एक भिन्न है इस बात को समझना

जब हम यह समझते हैं कि हम में से हर एक को परमेश्वर द्वारा भिन्न वरदान दिया गया है, तब हम दूसरों से जलन रखने से बच सकते हैं। हर एक को एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाया गया है (रोमियों 12:4–6)। पवित्र शास्त्र के वचन हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर की ओर से विभिन्न वरदान और सेवाएं हैं और भिन्न भिन्न तरीके हैं जिसमें वह हमारे द्वारा कार्य करता है (1 कुरिं. 12:5–7)। उदाहरण के लिए, कोई प्रचार करता है, और कोई गीत गाता है और कोई वाद्य बजाता है। परमेश्वर ने हमें जैसा बनाया है, उसमें हमें आनन्द मनाना सीखना है। हमें अपने वरदानों, अभिषेक आदि की तुलना नहीं करना है। जो वरदान हमें दिए गए हैं उन्हीं के आधार पर हमारा न्याय नहीं होगा, परंतु उस विश्वासयोग्यता आधार पर जिसका उपयोग हमने परमेश्वर की महिमा के लिए और उसके उद्देश्यों को पूरा करने हेतु किया। हम उन वरदानों के लिए धन्यवाद देना सीखें जिन्हें हमने पाया है। दूसरों के साथ खुद की तुलना न करें और आप दूसरों से जलन रखने से बच सकते हैं।

परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना

हम बातों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना सीखें। जब पृथ्वी पर सबकुछ पूरा हो जाएगा, तब केवल परमेश्वर को महिमा मिलेगी और केवल उसी की आराधना होगी। जब हम बातों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखेंगे, तब जलन के लिए कोई जगह नहीं होगी। जो बातें इतनी महत्वपूर्ण लगती हैं, जो जलन की भावनाओं का कारण होती हैं, उनका महत्व न होगा।

हमें खुद के साथ ईमानदार बने रहने की ज़रूरत है और हमारे जीवनों में जलन की भावनाओं को कबूल करना है और उन्हें त्याग देना है। हमें निरंतर ईर्ष्या से अपने हृदय की रक्षा करना है। हमें जलन न रखने का प्रयास करना है। यदि हमारे हृदयों में जलन की भावना है

तो परमेश्वर हमारे द्वारा कार्य नहीं करेगा। हम आत्मा के शुद्ध करने वाले कार्य को कबूल करें, पश्चाताप करें और प्राप्त करें!

जलन की हर जड़ से हमें अपने हृदयों की रक्षा करना है। कभी कभी, हमारे साथ अन्याय हो सकता है। हमारे साथ अन्यायपूर्ण आचरण हुआ होगा और जो हमें मिलना था वह दूसरों ने पाया होगा। फिर भी, जलन रखने का कोई कारण नहीं। उसे त्याग दें और परमेश्वर को परमेश्वर रहने दें। कहें, "परमेश्वर, मैं किसी से जलन नहीं रखना चाहता।"

यदि हम प्रचारक और परमेश्वर के सेवक हैं और दूसरों को देखते हैं जो हमसे अधिक अभिषिक्त हो सकते हैं, हमसे अधिक परिणाम हासिल करते हैं, जिनकी हमसे अधिक उन्नतिप्रद सेवकाई आदि है, उनके लिए हमें अपने हृदयों में जलन की भावना नहीं आने देना चाहिए। उनके लिए परमेश्वर की स्तुति हो! परमेश्वर के संगी सेवक होने के नाते हम उनके साथ आनन्द मनाएं। हम जलन की भावना से हमारे हृदयों की रक्षा करें अन्यथा हम हर प्रकार की बुराई के लिए द्वार खोल खतरा मोल लेते हैं।

यदि हम जलन की भावना के शिकार रहे हैं, तब हमें उसमें शामिल लोगों को क्षमा करना है और परमेश्वर को अनुमति देना है कि वह परिस्थिति पर काबू करे।

- क्या हमारे जीवनों जलन की भावना है?
- क्या परमेश्वर के भवन में जलन की भावना है?
- क्या हम अपने जीवनसाथी से ईर्ष्या रखते हैं?
- क्या हम अपने भाई बहनों से ईर्ष्या रखते हैं जिन्होंने बहुत अधिक हासिल किया है या हमसे अधिक गुण सम्पन्न या प्रतिभावान हैं?

- क्या हम अपने साथियों से ईर्ष्या रखते हैं जो हमसे आगे निकल गए?

हम अपने जीवनों में जलन की जड़ पर कुल्हाड़ा मारें!

प्रार्थना

परमेश्वर, मेरे जीवन में जलन की भावना है। मैं जलन से मुक्त जीवन बिताना चाहता हूं। प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे हृदय में जलन की जड़ पर कुल्हाड़ा मारें। पिता मेरे जीवन में अपनी इच्छा को पूरा करें। प्रभु, मुझे इस योग्य बनाएं कि मैं दूसरों की आशीषों में आनन्द मनाऊं; मुझे इस योग्य बनाएं कि मैं इस बात को जानूं कि हर व्यक्ति भिन्न तरह से बनाया गया है; मैं इस बात को जानने पाऊं कि मैं अद्वितीय हूं। प्रभु, मुझे प्रेम में चलाइए; मुझे आपके द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों के प्रति बनाइए, दूसरों से तुलना न करते हुए और ईर्ष्या न रखते हुए; अपने हृदय की जलन से रक्षा करने की और मेरे हृदय के हर बुरे काम के लिए द्वार बंद रखने की योग्यता मुझे दीजिए। प्रभु, मेरे जीवन के हर क्षेत्र में ईश्वरीय दृष्टिकोण रखने की योग्यता मुझे दीजिए; प्रभु, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि केवल आप ही अंत में सारी महिमा पाएंगे। प्रभु, जिस व्यक्ति ने मुझे चोट पहुंचाई उसे क्षमा करने का मैं चुनाव करता हूं; मैं चुनाव करता हूं कि मैं अपने मन में कड़वाहट नहीं रखूंगा।

कोई भी ईर्ष्या से प्रेरित होकर कुछ न करें। पिता, प्रभु के भवन में कोई जलन की भावना या ईर्ष्या न हो।

पिता, मैं आपको धन्यवाद देता कि आप मेरे जीवन में कार्य कर रहे हैं। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूं। आमेन।

जड़ पर
कुल्हाड़ा
मारना
मैं • ईर्ष्या • घमंड • वासना

3

घमण्ड की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना

घमण्ड की परिभाषा हम अक्खड़पन, अभिमान, खुद को बढ़ावा देना, खुद को महत्व देना, बढ़ाई मारना, खुद की महिमा करने की कोशिश करना और इस प्रकार की भावना के रूप में कर सकते हैं जो हमें दूसरों से श्रेष्ठ समझने पर मज़बूर करती है। "जीवन का घमण्ड होता है जो हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से नहीं, परंतु इस दुनिया की एक रीति है। संसार के लिए खुद के विषय में अभिमान रखना और कुछ बातों में खुद को ऊंचा सोचना एक सामान्य बात है। यदि हम सावधान न रहे, तो हम भी इसी विचारधारा में और दृष्टिकोण में फंस जाएंगे।

क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परंतु संसार की ओर से है (1 यूहन्ना 2:16)।

हम इस संसार में क्या देखते हैं? शरीर की अभिलाषा, शरीर की धोखा देने वाली अभिलाषाएं, आंखों की पापमय लालसाएं और जीविका का घमण्ड जो इस संसार की शैली का भाग है। घमण्ड हमें यह महसूस कराता है कि हम किसी कार्य को अपने बलबूते पर पूरा कर सकते हैं। विश्वासियों के नाते, यदि हम सावधान न रहें, तो घमण्ड आसानी से हमारे जीवनों में प्रवेश करेगा। हम संभवतः शरीर की अभिलाषा के विषय में सावधान रहते हैं, उदाहरण के लिए, व्यभिचार – और आंखों की अभिलाषा जिसकी वजह से हम उन बातों की ओर नहीं देखते जो गलत हैं। दूसरी ओर घमण्ड इतना सुक्ष्म होता है कि वह आसानी से इस संसार की प्रणाली के माध्यम से, जहां हम रहते और कार्य करते हैं, हमारे जीवनों में प्रवेश कर सकता है।

छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है : अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पांव, झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य (नीतिवचन 6:16–19)।

"घमण्ड से चढ़ी हुई आंखों का" यहां पर उल्लेख है। घमण्ड परमेश्वर के लिए घृणास्पद है जिससे परमेश्वर नफरत करता है।

वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, परंतु दीनों पर अनुग्रह करता है (याकूब 4:6)।

यदि आपके मन में घमण्ड है, तो आप परमेश्वर के निकट प्रार्थना में नहीं जा सकते। परमेश्वर घमण्डियों या अभिमानियों का विरोध करता है। परंतु आप विवाद कर सकते हैं, "परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है, वह कैसे मेरा विरोध कर सकता है?" वह आपसे प्रेम करता है, परंतु आप में जो घमण्ड है उससे वह घृणा करता है। अतः, परमेश्वर घमण्डियों से दूर रहता है।

घमण्ड परमेश्वर को हमारे निकट आने से रोकता है। यह एक खतरनाक स्थान है, जहां परमेश्वर हमारे निकट नहीं आना चाहता। इस कारण जिस आत्मिक कार्य में हम लगे रहते हैं – चाहे आराधना, प्रार्थना, परमेश्वर का वचन पढ़ना, मनन, वचन का अंगीकार, उपवास और पैसा देना – यदि हमारे मन में घमण्ड हो, तो कम प्रभावी हो जाता है। आत्मिक कार्य परमेश्वर के निकट आने की इच्छा वह हमारे निकट आए इस इच्छा से किए जाते हैं, परंतु यदि हम अपने घमण्ड को नहीं त्यागना चाहते, तो परमेश्वर हमारे निकट नहीं आ सकता। परमेश्वर के बगैर, हम कुछ भी नहीं।

परमेश्वर किस पर अनुग्रह करता है? वचन कहता है कि वह विनम्र लोगों पर अनुग्रह करता है (याकूब 4:6)। दीनता या विनम्रता हमारे जीवनों में परमेश्वर का अनुग्रह पाने की योग्यता है। जो कुछ हमारे पास है और जो कुछ हम बनेंगे, वह हम परमेश्वर के अनुग्रह से बनेंगे। वस्तुतः, जो कुछ हम बनेंगे, और हमसे परे हासिल करेंगे, वह सबकुछ परमेश्वर के अनुग्रह से होगा। अतः, हमें पहले नम्रता में चलना है, तभी परमेश्वर का अनुग्रह हमारे जीवनों में प्रदान किया जाएगा।

विनम्रता के बगैर, हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की सर्वोच्च और उत्तम आशीष नहीं पा सकेंगे या सर्वोच्च और उत्तम व्यक्ति नहीं बन पाएंगे। उदाहरण के लिए, पवित्रता ईश्वरीय अनुग्रह का उत्पाद है। हम में से सभी पवित्र बनना चाहते हैं, परंतु केवल परमेश्वर का अनुग्रह हमें पवित्र बना सकता है। परंतु यदि हम घमण्ड में चलें, तो यह ईश्वरीय अनुग्रह की आपूर्ति को रोक देता है और उसके अनुग्रह के बगैर हम पवित्र नहीं बन सकते। अतः यदि कोई पवित्र बनना चाहे, तो उसे नम्र या दीन होना होगा। विनम्रता के द्वारा हमारे जीवनों में ईश्वरीय अनुग्रह की निरंतर आपूर्ति होती है। परमेश्वर दीनों को अनुग्रह देता है, परंतु अभिमानियों का विरोध करता है।

महान अगुवे विनम्र लोग रहे हैं। अक्सर, हम केवल यह मानकर चलते हैं कि ये अगुवे वे लोग हैं जो सामर्थ और प्रभाव रखते हैं। परंतु बाइबल इसके विपरीत कहती है। मूसा संभवतः पुराने नियम के महान अगुवों में से एक था। उसने साठ लाख या उससे अधिक लोगों की उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रति अगुवाई की, परंतु गिनती 12:3 में लिखा है, "मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।" यह इस बात पर ज़ोर देता है कि यद्यपि मूसा को सबसे अभिमानी होने का अवसर था, क्योंकि उसे परमेश्वर ने बुलाया था, परंतु मूसा संपूर्ण पृथ्वी पर सबसे अधिक नम्र व्यक्ति था। मूसा में नम्र स्वभाव था और इसी वजह से परमेश्वर उसे उपयोग कर सका।

घमण्ड अत्यंत सूक्ष्म बात है। शरीर के पापों को और आंखों के पापों को पहचानना सरल है, परंतु हमारे अंदर के घमण्ड को पहचानना कठिन है। **हम सोचते हैं कि हम घमण्ड से मुक्त हैं, जबकि जिन बातों को हम सोचते हैं, जो कहते हैं, हमारी प्रवृत्तियां और आचरण घमण्ड से कलंकित हैं।**

> यदि हम घमण्ड में चलते हैं, तब हम हमारे जीवनों में ईश्वरीय अनुग्रह की आपूर्ति को रोक देते हैं और न कुछ बन सकते हैं और न ही हासिल कर सकते हैं। अतः, हमें पहले नम्रता में चलना है, तभी परमेश्वर का अनुग्रह हमारे जीवनों में प्रदान किया जाएगा।

घमण्ड की अभिव्यक्ति

जब हम बीमार होते हैं, और डॉक्टर के पास जाते हैं, तब वह हमारे लक्षणों को देखता है और रोग का निदान करता है। हम परीक्षण करें और देखें कि हम किसी या सभी रोग—लक्षणों से पीड़ित तो नहीं जिसे घमण्ड कहा जाता है।

ज़िद्दी या हठिला होना

एक अच्छा हठिलापन है – अपनी बुलाहट, परमेश्वर के उद्देश्य और बातों के विषय में अटल या दृढ़संकल्प होना। हमें सही बातों में हठिला होना है। उदाहरण के लिए, पवित्रता के विषय में हठिले बनें और उसके विषय में समझौता न करें। जब पवित्रता की बात आती है, तब कोई हमें और कुछ न समझाने पाए। हमें अपने जीवनों पर परमेश्वर की बुलाहट के विषय में ज़िद्दी बनना है, अस्थिर नहीं रहना है। फिर भी हमें हठिलेपन से खुद को बचाना है और घमण्ड से उत्पन्न बातों को बदलने अनिच्छुक नहीं रहना है।

दानिय्येल ने राजा से कहा, अपने दान अपने ही पास रख; और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे; वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़ सुनाऊंगा, और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊंगा। हे राजा,

परमप्रधान परमेश्वर ने तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई, प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था; और उस बड़ाई के कारण जो उसने उसको दी थी, देश–देश और जाति–जाति के सब लोग, और भिन्न–भिन्न भाषा बोलनेवाले उसके सामने कांपते और थरथराते थे; जिसे वह चाहता उसे वह घात करता था, और जिसको वह चाहता उसे वह जीवित रखता था; जिसे वह चाहता उसे वह ऊंचा पद देता था, और जिसको वह चाहता उसे वह गिरा देता था। परन्तु, जब उसका मन फूल उठा, और उसकी आत्मा कठोर हो गई, यहां तक कि वह अभिमान करने लगा, तब वह अपने राजसिंहासन पर से उतारा गया, और उसकी प्रतिष्ठा भंग की गई; वह मनुष्यों में से निकाला गया, और उसका मन पशुओं का सा, और उसका निवास जंगली गदहों के बीच हो गया; वह बैलों की नाईं घास चरता, और उसका शरीर आकाश की ओस से भीगा करता था, जब तक कि उसने जान न लिया कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है (दानिय्येल 5:17–21)।

दानिय्येल हमें बताता है कि राजा नबुकद्नेस्सर क्यों उसके सिंहासन से नीचे उतारा गया। वह घमण्डी, हठिला और क्रूर बन गया था। हठिलापन और क्रूरता साथ–साथ चलते हैं और घमण्ड से उत्पन्न होते हैं।

"जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाश हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा" (नीतिवचन 29:1)। जब कोई बार–बार हमें सुधारता है और हम उसके परामर्श को नज़रअंदाज़ करते हैं, तब बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हमारा नाश होगा। उदाहरण के लिए, पति और पत्नी के रिश्ते में जब पत्नी किसी बातों के विषय में अपने विचार रखती है और अपने पति से राय मांगती है, तब बिना सोचे समझे उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों को वह इन्कार कर सकता है। इसके विपरीत भी हो सकता है। बार–बार उसके विचारों का इन्कार करना घमण्ड की जड़ हो सकती है।

दूसरा उदाहरण परमेश्वर की बातों से सम्बंधित हो सकता है। जब लोग ईश्वरीय परामर्श देते हैं और हमें सुधारने की कोशिश करते हैं तो हम उन्हें सुनने के लिए तैयार नहीं रहते, और अपने हृदयों को कठोर कर देते हैं और उनके द्वारा सुधारी गई बातों को नज़रअंदाज़ करते हैं। इस प्रकार के हठिलेपन से सावधान रहें जो कि घमण्ड की वजह से जन्म लेता है। सही बातों के विषय में हठिला होना अच्छी बात है, यद्यपि कई बार हम गलत बातों के विषय में भी ज़िद करते हैं। बाइबल कहती है कि इस प्रकार के कार्य का परिणाम बिना किसी उपाय के अचानक विनाश होता है।

अक्खड़पन/आवश्यकता से अधिक आत्म–विश्वास

घमण्ड की आत्मा अक्खड़पन या आवश्यकता से अधिक आत्म–विश्वास के रूप में प्रगट होती है। उदाहरण के लिए, यदि जॉनी 17 वर्ष का होता है और अपने पिता से कहता है, "मुझे कार की चाभियां दे दो, मैं गाड़ी चला सकता हूं," तो उसके पिता शायद उसे कहेंगे, "जॉनी, तुम्हें पहले ड्रायविंग स्कूल जाना होगा, लर्निंग लायसेंस लेना होगा, तब तुम सड़क पर गाड़ी चला पाओगे।" लेकिन जॉनी ज़िद्ध करता है, "पापा, मैं अब 17 वर्ष का हो गया और मुझे लर्निंग लायसेंस की ज़रूरत नहीं। मैं सड़क पर गाड़ी चला सकता हूं," तो यह अक्खड़पन या आवश्यकता से अधिक आत्म–विश्वास है। इसकी जड़ घमण्ड हो सकती है।

अक्खड़पन हमें यह सोचने पर मज़बूर करता है कि हम सबकुछ जानते हैं; हमें किसी और की सलाह को सुनने की ज़रूरत नहीं है, और हमें किसी प्रशिक्षण की या हमारे लिए आवश्यक बातों को करने की ज़रूरत नहीं है। हम ने मोआब के गर्व के विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी है; उसका गर्व, अभिमान और अहंकार, और उसका मन फूलना प्रसिद्ध है (यिर्मयाह 48:29)। तो हम घमण्ड के साथ क्या देखते हैं? हम अभिमान और अहंकार देखते हैं। मैं जगत के लोगों की उनकी बुराई के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म का दंड दूंगा; मैं अभिमानियों के अभिमान को नाश करूंगा, और उपद्रव करनेवालों के

घमंड को तोड़ूंगा (यशायाह 13:11)। इस प्रकार घमण्ड अक्खड़पन को उत्पन्न करता है। बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर का सच्चा भय हमें घमण्ड, गर्व और अहंकार और हर बुराई को त्यागने में सहायता करेगा।

यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं (नीतिवचन 8:13)।

मसीही विश्व में हम में से अधिकतर लोगों को सिखाया गया है कि हम आत्मिक तौर पर आक्रमणशील बनें। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी (मत्ती 11:12)। परंतु आत्मिक रीति से अंहकारी हुए बगैर ही हम आत्मिक रीति से आक्रमणशील बन सकते हैं। आत्मा की बातों के विषय में प्रबल होना अच्छी बात है, परंतु जब हम आत्मिक अंहकार को आत्मिक आक्रमणशीलता समझ बैठते हैं, तब समस्याएं उत्पन्न होती हैं। आत्मिक रीति से आक्रमणशील होने के प्रयास में, हम आत्मिक रीति से अंहकारी बन जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, शायद हम सोचते हैं कि हम सर्वोत्तम कलीसिया में हैं और अन्य कलीसियाओं को तुच्छ जानते हैं। आत्मिक अहंकार हमें यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि केवल हमारे पास ही सबकुछ सही है और बाकी हर व्यक्ति हमारी बराबरी में भला नहीं है, और काम करने का हमारा तरीका सर्वोत्तम है। हम यह सोचने पर मज़बूर हो जाते हैं कि हमारी मसीहत का ब्रान्ड (यदि ऐसी कोई चीज है तो) सर्वोच्च एवं एकमात्र तरीका है। हमें इसके विरोध में खुद की रक्षा करना है।

हमें वचन की सच्चाई का पक्षधर होना है, परंतु आत्मिक अहंकार हमें यह सोचने पर बाध्य करता है कि केवल हम ही हैं जिनके पास सच्चाई का सर्वोत्तम व्यक्तिगत प्रकाशन है और यह कि "और हमारे पास अंतिम सबसे गहरी खोज है, हमारा तरीका परमेश्वर द्वारा नियुक्त तरीका है और बाकी तरीके निम्न स्तर के हैं। इसके द्वारा हमारे स्व में भरोसा उत्पन्न होता है, आवश्यकता से अधिक हम खुद को महत्व देने

लगते हैं और व्यक्तिगत विश्वास, तरीके, शैलियां और पसंदगी को हम परम मानकर चलते हैं और इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करते हैं कि "और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है" (1 कुरिं. 12:6)। हमें इस विषय में अत्यंत सावधान रहने की ज़रूरत है। कई प्रकार के कार्य हैं। जो परमेश्वर हमारी कलीसियाओं में कार्य करता है, वही किसी और कलीसिया में या पृष्ठभूमि में कार्य कर सकता है। अतः हम यह नहीं कह सकते कि हमारा तरीका ही एकमात्र तरीका है।

मैं काफी समय वचन की शिक्षा और प्रचार में व्यतीत करता हूं, परंतु कभी कभी मैं टेप सुनता हूं, किताबें पढ़ता हूं, अन्य सेवकों को टेलीव्हिजन पर प्रचार करते सुनता और देखता हूं। ऐसे समयों में, मैं विद्यार्थी के समान बैठता हूं। मैंने कई उपदेश प्रचार किए होंगे; परंतु जब और कोई बोलता है, भले ही वह मुझसे दस साल छोटा हो या पचास वर्ष बूढ़ा, मैं सुनता हूं क्योंकि हो सकता है कि परमेश्वर उस व्यक्ति का उपयोग कर मुझसे बात करे। परंतु आत्मिक अंहकार व्यक्ति को उस सेवक का उपदेश सुनने से रोकता है जो शायद उम्र में छोटा हो। हम स्मरण रखें कि वचन में यह बताया गया है कि परमेश्वर ने गदहे के द्वारा भी बातें की!

विद्रोह

विद्रोह घमण्ड की जड़ की अभिव्यक्ति है। यह परमेश्वर द्वारा नियुक्त अधिकार के प्रति अधीन होने की इच्छा न होना है, यह अधिकार हमें तीन तरह से दिया जाता है – उसका वचन, उसका आत्मा, और उसके लोग। उदाहरण के लिए, माता–पिता हमारे जीवनों में परमेश्वर द्वारा नियुक्त अधिकारी हैं, फिर हमें यह पसंद हो या न हो। घमण्ड की वजह से व्यक्ति परमेश्वर द्वारा नियुक्त अधिकार के प्रति विद्रोह में चलने का कारण बनता है।

आंशिक आज्ञाकारिता को विद्रोह माना जाता है! हम में से कई लोग आंशिक रूप से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। परमेश्वर ने

शौल से बात की और उसे स्पष्ट निर्देश दिया कि वह अमालेकियों का नाश करे और इस बात का ध्यान रखे कि वह हर वस्तु को पूर्ण रूप से नाश कर दे (1 शमुएल 15)। परंतु शौल ने आज्ञा का एक भाग पूरा किया। उसने कुछ वस्तुओं को तो नाश कर दिया और राजा और कुछ पशुओं को जीवित बचा रखा। जब शमुएल ने पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया, तब उसने उत्तर दिया कि बची हुई वस्तुओं को परमेश्वर के सामने वह बलि चढ़ाना चाहता था। शमुएल ने उत्तर दिया, "देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है" (1 शमुएल 15:23)। शौल का अपराध आंशिक आज्ञापालन था। हम में से कुछ लोग परमेश्वर से कहते हैं, "प्रभु, मैं आपको भेंट चढ़ाऊंगा, परंतु मुझसे दसवांश न मांगे।" आंशिक आज्ञाकारिता फिर भी विद्रोह है!

सबसे बड़ा विद्रोह का कार्य लूसीफर ने किया, इस विद्रोह की जड़ घमण्ड थी। यशायाह 14:12–15 में हम लूसीफर के पतन के विषय में पढ़ते हैं, "हे भोर के चमकनेवाले तारे तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है? तू जो जाति जाति को हरा देता था, तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है? तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर बिराजूंगा; मैं मेघों से भी ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा। परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की तह तक उतारा जाएगा।" इतिहास में घमण्ड से उत्पन्न यह सबसे बड़ा विद्रोह का कार्य था।

कभी कभी जब जवान लोग बड़े होते हैं तब समझने लगते हैं कि हम अपने माता–पिता से अधिक जानते हैं। हमें लगता है कि हम ही आधुनिक, वर्तमान हैं और आधुनिक और विश्व में सबसे महान बातों के संपर्क में हैं। हम सोचते हैं कि हमारे माता–पिता पुराने ख्यालों के हैं

और उनका दुनिया से संपर्क नहीं है। इसलिए हम निरंतर उनकी आज्ञा और सलाह के विरोध में विद्रोह करते हैं। इससे हम जोखिम के स्थान पर आ जाते हैं। जीवन में आशीष का रहस्य इफिसियों 6:1–3 में पाया जाता है: हे बालको, प्रभु में अपने माता–पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है), कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। हमें परमेश्वर की ज़रूरत परीक्षा देते समय, कॉलेज में दाखिला लेते समय, हमारे स्वास्थ्य और दीर्घायु की आशीष के लिए महसूस होती है। हम अपना भला चाहते हैं, परंतु परमेश्वर कहता है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारा भला हो, तो हमें माता–पिता का आदर करना होगा। यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा जुड़ी हुई है। यदि आप इसका पालन करेंगे, "तो आपका भला होगा और आप पृथ्वी पर बहुत समय तक जीवित रहेंगे," परमेश्वर कहता है। हमें अपने माता–पिता का आदर करना है और उन्हें उचित आदर देना है।

यह कहने के बाद बाइबल कहती है कि हम "प्रभु में" अपने माता–पिता की आज्ञा मानें। अतः ऐसी परिस्थितियों में जहां माता–पिता परमेश्वर के वचन के विपरीत कार्य करने कहते हैं, तब परमेश्वर के वचन के पक्ष में खड़े रहने का हमें अधिकार है।

जब मैं छोटा था, तब मैं मेथोडिस्ट चर्च की अवकाशकालीन बाइबल कक्षा में जाता था जहां पर हमें प्रोत्साहित किया जाता था कि हम घर पर कोई काम करें ताकि प्रभु को भेंट देने हेतु कुछ पैसा कमा सकें। इसलिए मैंने अपने पिता के जूते पॉलिश कर कुछ पैसा कमाने का निर्णय लिया। अवकाशकालीन बाइबल कक्षा पूरी होने पर, मैंने जाना कि पैसा कमाने का यह अच्छा तरीका है और इस कारण मैं अपने पिता के जूते पॉलिश करता रहा, हिसाब रखता रहा और माह के अंत में मुझे इसके लिए पैसा दिया जाता था। इसके अलावा, मैं हर सुबह उनके कपड़े भी प्रेस करता था, मेरी सातवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा तक मैंने बिना पैसे लिए उनके लिए यह काम किया। यह आदर और

सम्मान का कार्य था, इस कारण मुझे ऐसा लगता था कि उनके जीवन की सफलता का मैं भागी रहा हूं। कुछ सुबह मुझे काम करने की इच्छा नहीं होती थी, परंतु मैं खुद को परमेश्वर की आज्ञा का स्मरण दिलाता था कि यदि मैं अपने माता–पिता का आदर करूंगा, तो मौ सबकुछ भला होगा। मैं अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहता था और इसलिए मैंने परमेश्वर से कहा, "मैं आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूं, इसलिए अब मेरे साथ सबकुछ भला होगा।" यदि हम घर में परमेश्वर द्वारा नियुक्त, हमारे काम के स्थानों में और प्रभु के घर में नियुक्त अधिकारियों को सरल व्यवहारिक तरीके से सम्मान दें, तो हमारे जीवनों में आशीष प्राप्त करेंगे।

दूसरों को तुच्छ समझना

घमण्ड की जड़ का चौथा प्रगटीकरण दूसरों को तुच्छ समझना है। इसका मतलब दूसरों का ठट्ठा करना, अनादर करना, उपहास करना और तिरस्कार करना है। यह सामान्य तौर पर हमारे द्वारा दूसरे लोगों के विषय में की गई टिप्पणियों में और दूसरों के विषय में हमारी राय में दिखाई देता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो दूसरों के विषय में शायद ही कुछ अच्छा बोल पाते हैं। वे हमेशा दूसरों के बारे में निम्न स्तर की बातें और अपमानजनक बातें कहते हैं। यह दूसरों को तुच्छ जानना है और सामान्यतया इसका जन्म घमण्ड से होता है।

बाइबल कहती है कि किस प्रकार ठट्ठा करने वाले अन्य लोगों की करने में आनंद मनाते हैं। "क्योंकि ठट्ठा करनेवाले ठट्ठा करने से प्रसन्न रहते हैं" (नीतिवचन 1:22ब) "ठ्टटा करनेवालों से वह निश्चय ठट्ठा करता है और दीनों पर अनुग्रह करता है" (नीतिवचन 3:34)। यह एक चेतावनी है कि ठट्ठा करने वाले अन्य लोगों की ठट्ठा करता है! "जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है, उसका नाम अभिमानी, और अहंकारी ठट्ठा करनेवाला पड़ता है" (नीतिवचन 21:24)।

हमें चेतावनी दी गई है कि ठट्ठा करने से समस्या उत्पन्न होती है – "ठट्ठा करनेवाले लोग नगर को फूंक देते है, परन्तु बुद्धिमान लोग

क्रोध को ठण्डा करते हैं। जब बुद्धिमान मूढ़ के साथ वादविवाद करता है, तब वह मूढ़ क्रोधित होता और ठट्ठा करता है और वहां शांति नहीं रहती" (नीतिवचन 29:9)।

आत्म–धर्मिता / पाखंड

फरीसी और चुंगी लेने वाले की प्रार्थनाओं के अंतर पर विचार करें।

और उसने उनको जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहाः दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिए गए – एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला। फरीसी खड़ा होकर अपने मन में इस प्रकार प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं अन्य मनुष्यों के समान अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं।' मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं। परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा (लूका 18:9–14)।

कभी कभी हम ऐसा आचरण करते हैं कि हम धर्मी हैं और दूसरों को तुच्छ जानते हैं। घमंड आत्म–गर्विता को उत्पन्न करता है जो व्यक्ति को पाखंडी बनाती है। आत्म–गर्विता हमें दूसरों का न्याय करने पर बाध्य करती है और हममें जो दोष है उसे न पहचानते हुए हम यह सोचने लगते हैं कि हम दूसरों से बेहतर हैं। पाखंडी वह है जो अपने पापों के लिए बहाना बनाता है और दूसरों के पापों के लिए उन पर दोष लगाता है। उदाहरण के लिए आप किसी से यह पूछ सकते हैं कि उसने उस दिन बाइबल क्यों नहीं पढ़ी और उन्हें दोषी महसूस करवाते हैं, जबकि यदि आप खुद से यही प्रश्न पूछेंगे, तो आप पाएंगे कि बाइबल न पढ़ने के लिए आपके पास बहुत अच्छा बहाना था।

दोष मत लगाओ ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं दिखाई देता? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से यह कैसे कह सकता है, कि ला, मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। हे पाखण्डी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा (मत्ती 7:1–5)।

हमें दूसरों पर दोष लगाने के पाप से मुक्ति पाना होगा क्योंकि यह हमें खुद के पाप को पहचानने से रोकता है। हममें से कुछ लोग दूसरों के पापों को पहचानने में माहीर होते हैं, जबकि अपनी आंखों का 'लट्ठा' उन्हें दिखाई नहीं देता। दूसरों पर दोष लगाने से हम पवित्र नहीं बन जाते; न ही दूसरों पर दोष लगाने से हम परमेश्वर के निकट आते हैं। इस प्रकार की 'दोष ढूंढ़ने वाली सेवकाई' निश्चित ही हमें परमेश्वर के निकट नहीं ले आएगी! मूल्यांकन उचित है, परंतु प्रभु के भवन में अपने साथी भाई और बहनों पर दोष लगाने से पूर्व, हमें सावधान रहने की ज़रूरत है। जिस सिंहासन से प्रभु एक दिन हमारा न्यायी होगा, उस पर विराजमान होने से पहले मसीह पापियों के लिए मर गया। परमेश्वर के राज्य में, जब तक हम पहले अपने जीवनों को लोगों के लिए अर्पित करने हेतु समर्पित नहीं होते, तब तक हमें उनका अगुवा या न्यायाधीश होने का अधिकार नहीं दिया जाता। अतः लोगों का न्याय करने से पहले, हमें खुद से यह प्रश्न पूछना होगा कि क्या हम उनके लिए मरने हेतु तैयार हैं, जहां वे हैं वहां से उन्हें पूर्णता के स्थान पर लाने हेतु तैयार हैं! जब हम पाप, अन्याय और अधर्म के विरोध में बोलते हैं, तब हमें पुनर्स्थापन और पूर्णता के एकमात्र उद्देश्य के साथ परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होकर बोलना है। यदि यह हमारी प्रेरणा या लक्ष्य नहीं है, तो हमें शांत रहना सीखना है!

झगड़ालू/कलहप्रिय होना

कभी कभी हम इतना लड़ाई–झगड़ा करते हैं कि उसकी जड़ घमंड में हो सकती है। "झगड़े–रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परंतु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके लिए बुद्धि रहती है" (नीतिवचन 13:10)। "लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हष्ट–पुष्ट हो जाता है" (नीतिवचन 13:10)। "लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हश्टपुश्ट हो जाता है" (नीतिवचन 28:25)। इस प्रकार घमंड झगड़े को उत्पन्न करता है।

पूर्वग्रह

घमंड पूर्वग्रह को भी जन्म देता है। पूर्वग्रह कुछ विशेष प्रकार के लोगों के प्रति भेदभाव, पक्षपात, असहिष्णुता और सोची–समझी अन्यायपूर्णता है। हममें से सभी जीवन में किसी न किसी समय लोगों के प्रति किसी प्रकार का पूर्वग्रह रखते हैं। यह धनवान और कंगाल के बीच का भेद हो सकता है और आप गरीब व्यक्ति की तुलना में धनवान व्यक्ति के प्रति अधिक मित्रता रखते हैं और शैक्षणिक योग्यता के आधार पर लोगों के विरोध में पूर्वग्रह रखते हैं। हम इस आधार पर भी भेद रखते हैं कि लोग देश के किस भाग से हैं, उनका रंग कैसा है, वे स्त्री हैं या पुरुष और कभी कभी किस कलीसिया से आते हैं इस आधार पर हम उनसे व्यवहार करते हैं।

हमें इस प्रकार के पूर्वग्रह के विषय में चेतावनी दी गई है : "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गलातियों 3:28)। हम सब परमेश्वर के लोग हैं और हमें यह सीखना है कि घमंड से उत्पन्न हमारे पूर्वग्रहों से छुटकारा पाने के द्वारा हम कैसे सबसे के साथ समानता का बर्ताव करें।

अभिमानी होना

कभी कभी भले ही हमारे पांव ज़मीन पर हों, हमारी बुद्धि/मस्तिष्क आसमान में होता है। हम में से अधिकतर लोग इस रोग से पीड़ित हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो" (रोमियों 12:16)। हम इतने अभिमानी होते हैं कि हम लोगों के साथ जुड़ नहीं सकते। हमने "अवकाश युग की शिक्षा" पाई होगी, परंतु हम हमारे घर में काम करने वाले व्यक्ति के साथ साधारण वार्तालाप भी नहीं कर सकते। हमारी सम्पत्ति भी हमें अभिमानी बना सकती है और हम सोचने लगते हैं कि हम किसी विशिष्ट वर्ग के लोग हैं। हमारे गुण एवं योग्यताएं, हमारी पात्रताएं हमें यह सोचने पर मज़बूर करती हैं कि हम किसी विशेष वर्ग के लोग हैं। "इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है" (1 तीमुथियुस 6:17)। हम बड़ी बातों पर अपना ध्यान न लगाएं और दीन लोगों के साथ मेलजोल रखना सीखें। हमें ऐसे लोग बनना है जो हर किसी के साथ रिश्ता रख सकते हैं और अपनी ही दृष्टि में बुद्धिमान न बनें।

घमण्ड की अभिव्यक्ति

- ज़िद्दी या हठिला होना
- अक्खड़पन/आवश्यकता से अधिक आत्म–विश्वास
- विद्रोह
- दूसरों को तुच्छ समझना
- पाखण्ड
- आत्म–धर्मिता/पाखण्ड
- झगड़ालू/कलहप्रिय
- पूर्वग्रह
- अभिमानी होना

घमण्ड से भरे हृदय के परिणाम

लज्जा को उत्पन्न करता है

शर्म या लज्जा के साथ घमण्ड होता है। "जब अभिमान होता है, तब अपमान भी होता है, परंतु नम्र लोगों में बुद्धि होती है (नीतिवचन 11:2)।

पतन और विनाश में परिणति

विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है (नीतिवचन 16:18)।

और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, तुम सब मेरी सुनो, और समझो। ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से समाकर अशुद्ध करे; परन्तु जो वस्तुएं मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती हैं। यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले! जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उससे पूछा। उसने उनसे कहा, क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और बाहर निकल जाती है? यह कहकर उसने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया। फिर उसने कहा, जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से बुरे–बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं (मरकुस 7:14–23)।

यीशु ने बताया है कि घमण्ड उन बातों में से एक है जो अंदर से आता है और मनुष्य को अशुद्ध करता है। यह विनाशकारी होता है और व्यक्ति को पतन की दिशा में ले जाता है।

खुद को धोखा देता है

घमंड हमें धोखा दे सकता है। "हे पहाडों की दरारों में बसनेवाले, हे ऊंचे स्थान में रहनेवाले, तेरे अभिमान ने तुझे धोखा दिया है; तू मन में कहता है" (ओबद्याह 1:3)। "इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है" (याकूब 1:21)।

विनम्रता से भरा हृदय परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने, वह वचन हमारे जीवनों में अनुभवात्मक वास्तविकता बनने और हम में जड़ पकड़ने हेतु एक पूर्व पात्रता है। परंतु घमण्ड हमें परमेश्वर के वचन से ग्रहण करने में रूकावट लाता है और हमें धोखे की ओर ले जाता है। धोखा या छल परमेश्वर के वचन का बहुत ज्ञान होना है, परंतु वचन को यह अनुमति न देना कि वह हमारे जीवन को बदल दे। जो प्रकाशन व्यक्ति को परिवर्तन की ओर नहीं ले जाता, वह उसे धोखे की ओर ले जा सकता है, क्योंकि हम सोच सकते हैं कि हमने "हासिल कर लिया है" जबकि वास्तव में हम केवल "जानने वाले" हैं। और जानना और हासिल करना दो भिन्न बातें हैं। आत्मिक दिमागी ज्ञान होना और वचन का देहधारी होना इसमें फर्क है – जब वचन हमारे जीवनों में अनुभवात्मक वास्तविकता बन जाता है। जो आत्मिक ज्ञान व्यक्ति के जीवन में अनुभवात्मक वास्तविकता नहीं बनता, वह उसे घमण्डी बना देता है।

बाइबल कहती है, "अब मूरतों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के विषय में : हम जानते हैं कि हम सब को ज्ञान है; ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (1 कुरिं. 8:1)। परंतु यदि हम नम्र हृदय रखें, तो वह वचन को हमारे जीवन में केवल ज्ञान नहीं, परंतु वास्तविकता बनाएगा। शैतान के झूठ बड़ी खामोशी से हमारे मनों में प्रवेश करते हैं, चिल्लाते चीखते हुए नहीं। यद्यपि वह ज्योति के दूत का रूप धारण करता है, फिर भी वह अंधकार में चलता है, ज्योति में नहीं। वह छत पर खड़े होकर यह नहीं पुकारता कि, "देखो, मैं तुम्हारे जीवनों

में धोखा ले आ रहा हूं।" बल्कि, जो धोखा बड़ी खामोशी से आता है, धीरे धीरे हमारे मनों में रीसता जाता है, हमें धोखा देता है और सत्य को छिपा देता है।

दोषी ठहराता है

हमारे जीवनों में कार्यरत घमण्ड का सबसे गंभीर परिणाम यह है कि वह हमारे जीवनों पर दोष और परमेश्वर का दण्ड ले आता है। पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिए कि प्रभु के भवन में नियुक्त अधिकारी कौन होने चाहिए: "फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए" (1 तीमुथियुस 3:6)।

> शैतान ने जब विद्रोह किया, दोषी सिद्ध हुआ और परमेश्वर की उपस्थिति से हटा दिया गया, वही दण्ड और न्याय घमण्ड ले आता है।

चाहे हम जवान हों या बूढ़े, हमें अपने हृदयों को जांचने की, हमारे जीवनों में घमण्ड की जड़ को मिटाने और उससे छुटकारा पाने की ज़रूरत है। हमारी प्रार्थना हो, "प्रभु यीशु, मेरे जीवन में घमण्ड की जड़ पर कुल्हाड़ा मारें।"

दीन और नम्र स्वभाव बनाए रखना

हमें विनम्र बनने के लिए बुलाया गया है

दीनता, नम्रता और विनयशीलता मसीही सद्गुण हैं। हमें जिस बुलाहट के लिए बुलाया गया है, उसे हम दीनता और नम्रता के साथ पूरा करें। पवित्र शास्त्र हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर के सेवकों को दीनता की आत्मा के साथ सेवा करना है।

अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो (इफिसियों 4:2)।

इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो (कुलुस्सियों 3:12)।

और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहचानें (2 तीमुथियुस 2:25)।

इस बात को समझें कि दीनता सच्चा बल है

दीनता कमज़ोरी नहीं है – ऐसी बात जिस पर नीचे दिए गए अनुच्छेद में ज़ोर दिया गया है।

परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी। और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। परंतु मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन तेरी दघा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी। उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं आपका धन्यवाद करता हूं, कि आपने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा और बालकों पर प्रगट किया है। हां, हे पिता, क्योंकि आपको यही अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे में जाता था (मत्ती 11:22–29)।

यीशु ने खुद का वर्णन नम्र और मन में दीन व्यक्ति के रूप में किया। सावधान रहें जब कोई नम्र और मन में दीन होने के विषय में

तुच्छता के साथ बोलता है। यह मसीह के स्वभाव और चरित्र के एकदम विपरीत है! नम्रता पुन्रुत्थित मसीह का एक गुण है और उसके आत्मा के द्वारा हममें उत्पन्न होता है।

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज (गलातियों 5:22)।

यीशु कहता है, "धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे" (मत्ती 5:5)। नम्रता कमज़ोरी नहीं, परंतु बल है। महान विजय की कुंजी नम्रता की आत्मा है, क्योंकि नम्र लोग ही पृथ्वी के वारिस होंगे। यदि हम परमेश्वर के राज्य के लिए विजेता बनना चाहते हैं, तो हममें विनम्रता का स्वभाव होना चाहिए।

हमेशा सेवक का भाव बनाए रखें

जो कुछ आप करते हैं, अपने हृदय को जांचें और कहें, "प्रभु, मैं सेवक का हृदय रखना चाहता हूं।"

और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा (मत्ती 23:10–12)।

ज़ोर खुद को विनम्र बनाने पर है

जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो, जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की

महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:5–11)।

हमेशा खुद का सही मूल्यांकन करना

क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुममें से हर एक से कहता हूं कि जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे, पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे (रोमियों 12:3)।

हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो (गलातियों 6:1)।

विनम्रता हर समय प्रभु पर पूर्ण रूप से निर्भर होकर चलना है

वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, परंतु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो, और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो। दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ; तुम्हारी हंसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए। प्रभु के सामने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा (याकूब 4:6–10)।

सच्ची नम्रता हमारी कमज़ोरी और हमारी ज़रूरतों की स्थिति का अहसास रखने से अधिक है। जब सबकुछ हमारे साथ अच्छा होता है और हम सम्पन्न होते हैं और परमेश्वर सामर्थ के साथ हमारा उपयोग करता है तब हमें यह स्मरण रखने की ज़रूरत है कि, "परमेश्वर, यह सब आपकी वजह से है।" बड़ी आशीष, बल और विजय के समयों में भी, हमें प्रभु पर हमारी पूर्ण निर्भरता को पहचानना है और उसमें

आनन्दित होना है, यह जानते हुए कि जो कुछ हमारे पास अच्छा है, उसी की ओर से आया है। यही सच्ची विनम्रता है।

यह नहीं कि हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है (2 कुरिं. 3:5)।

अधीनता और पश्चाताप कुंजी हैं

हमें अपने जीवनों में घमण्ड की सम्भावना को कबूल करना है और निरंतर अपने हृदयों, विचारों, प्रवृत्तियों और कार्यों को जांचना है। हमें इस धारणा से छुटकारा पाना है कि घमंड से पूर्ण रूप से मुक्त हैं।

इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो, और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो। दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ; तुम्हारी हंसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी से बदल जाए (याकूब 4:7–9)।

हमें लगातार प्रभु की उपस्थिति में खुद का मूल्यांकन करना है, उसके अधीन होना है, पश्चाताप करना है, हमारे हाथों को और हृदयों को शुद्ध करना है। हमें निरंतर प्रभु से पूछना है कि वह हमारे हृदय को खोजें और हमारे जीवनों के घमण्ड को अपनी आत्मा के द्वारा प्रगट करे। क्योंकि नम्र व्यक्ति सम्मान पाएगा।

मनुष्य गर्व के कारण नीचा खाता है, परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी भी होता है (नीतिवचन 29:23)।

* महान विजय की कुंजी नम्रता की आत्मा है, क्योंकि नम्र लोग ही पृथ्वी के वारिस होंगे। यदि हम परमेश्वर के राज्य के लिए विजेता बनना चाहते हैं, तो हममें विनम्रता का स्वभाव होना चाहिए।
* जो कुछ आप करते हैं, उसमें अपने हृदयों को जांचें और कहें, "प्रभु, मैं सेवक का हृदय रखना चाहता हूं।"
* बड़ी आशीष, बल और विजय के समयों में भी, हमें प्रभु पर हमारी पूर्ण निर्भरता को पहचानना है और उसमें आनन्दित होना है, यह जानते हुए कि जो कुछ हमारे पास अच्छा है, उसी की ओर से आया है। यही सच्ची विनम्रता है।

प्रार्थना

पिताजी, मैं आपके सम्मुख आता हूं और आपसे बिनती करता हूं कि नम्र हृदय बनाए रखने में मेरी सहायता करें। परमेश्वर पिता, दीनता और नम्रता की आत्मा में हर समय मेरे जीवन के हर भाग से घमण्ड को त्यागने में मेरी सहायता करें और हर समय आपके सम्मुख नम्रता के साथ चलने योग्य बनाएं। पिताजी, आप मुझमें और मेरे द्वारा चाहे जो करें, मैं केवल आपके सम्मुख नम्र बनना चाहता हूं। यह मेरी इच्छा है। प्रभु यीशु, मेरे घमण्ड की जड़ पर कुल्हाड़ा मारें!

जड़ पर
कुल्हाड़ा
मारना
मैं • ईर्ष्या • घमंड • वासना

4

वासना की जड़ पर कुल्हाड़ा मारना

स्व (स्वार्थ), जलन और घमण्ड की जड़ों पर कुल्हाड़ा कैसे मारें यह जानने के बाद, अब हम हमारे जीवनों में वासना की जड़ का सामना करेंगे। वासना या शरीर की अभिलाषा क्या है? वासना किसी भी तरह की अनियंत्रित, अवास्तविक, अति, अमर्यादित इच्छा – वासना, तीव्र इच्छा, लालसा और किसी चीज़ के लिए चाह है। बाइबल वासना की परिभाषा "लालच या अनुचित प्रवृत्ति" के रूप में करती है। वासना संसार का तरीका है, जिस तरह संसार कार्य करता या चलता है। यह संसार में भर गया है।

और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे (इफिसियों 2:1–3)।

संसार का तरीका शरीर और मन की अभिलाषाओं को पूरा करना है – यदि वह आपको अच्छा लगता है या आपको प्रसन्न करता है – तो उसे करें! एक समय हम इस संसार की रीति का हिस्सा थे जो वासना की प्रभुता में है। हम उसके अनुसार चलते थे और शरीर और मन की अभिलाषाओं को पूरा करते थे। परंतु मसीह के कारण, अब हमें वासना से चलाए जाने वाले संसार के बने नहीं रहना है।

जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं; ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ (2 पतरस 1:4)।

आज वासना की वजह से भ्रष्टता या नैतिक सड़ाहट है। परंतु सुसमाचार यह है कि परमेश्वर ने हमें अपने वचन में अत्यंत महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दी हैं, जिनके द्वारा हम इस संसार की सड़ाहट और भ्रष्टता से बच सकते हैं। हमें भ्रष्टता के उस जाल में नहीं फंसना है। हम उससे बच सकते हैं। आमीन! इच्छा या अभिलाषा अपने आपमें बुरी नहीं है। वस्तुतः हमें अच्छी व स्वस्थ इच्छाएं रखनी चाहिए। यदि हमारे पास इच्छा न होगी, तो हम प्रेरणा नहीं पाएंगे और इस जीवन में यूं ही चलते रहेंगे। बाइबल कहती है कि हमें परमेश्वर से और पाने की इच्छा रखना है – उसकी उपस्थिति, उसकी सामर्थ और उसका वचन।

यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा (भजन 37:4)।

दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है, परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है (नीतिवचन 10:24)।

इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा (मरकुस 11:24)।

प्रार्थना करने से पहले, हमें भली और उचित बातों के लिए इच्छा रखने की ज़रूरत है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब गलत बातों के लिए चाह होती है जो अनियंत्रित और अत्याधिक होती है।

जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खींचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यू को उत्पन्न करता है। हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ (याकूब 1:13–16)।

परीक्षा या प्रलोभन अपनी ही वासनाओं की वजह से अपनी ही इच्छाओं से खींचे जाना है। यह शैतान की इच्छा नहीं है या हमारे पड़ोसियों की इच्छा नहीं है, परंतु हमारी इच्छाएं हैं जो कार्य करती हैं और हमें खींचने और मोहित करने का प्रयास करती हैं, और उसके द्वारा उसका सामना करने की हमारी इच्छाओं को कमज़ोर बना देती हैं। प्रलोभन या परीक्षा तब आती है जब किसी गलत बात के लिए हमारे अंदर इच्छा उत्पन्न होती है और उस इच्छा का इन्कार करने की हमारी इच्छाओं को निर्बल कर देती है। गलत इच्छाओं की उत्तेजना होती है क्योंकि हम अपने विचारों, तर्क, कल्पनाओं और जानकारी से अपनी रक्षा नहीं करते जिसके लिए हम अपने आपको खुला छोड़ देते हैं। यह अन्य लोगों के प्रभाव के द्वारा होता है। या यह सूचित विचारों, कल्पनाओं के द्वारा आता है जिसे दुष्टात्माएं हमारे मनों में डालती हैं। हमारी इच्छाएं हमें आकर्षित करती हैं। हमें उन इच्छाओं या अभिलाषाओं को वश में करना और नियंत्रण में रखना सीखना है। शैतान हमें पाप करने पर मज़बूर नहीं कर सकता। वह सूचक विचारों को हमारे मनों में डालता है जो हमारी अभिलाषाओं को उत्तेजित करते हैं और उन अभिलाषाओं को नियंत्रित नहीं किया गया, तो परीक्षाओं का सामना करने की हमारी इच्छाओं को वे कमज़ोर कर सकती हैं।

क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, परंतु जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा (1 यूहन्ना 2:16–17)।

उपर्युक्त वचन में, तीन बातों का उल्लेख किया गया है – जीविका का घमण्ड, शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा। संसार आंखों की अभिलाषाओं और शरीर की अभिलाषाओं के वश में है। “शरीर की अभिलाषा” का मतलब शरीर की पापमय लालसाओं को संतुष्ट करना है। आंखों की अभिलाषा जो कुछ हम देखते हैं, और उसे पाए बगैर जो हम पाना चाहते हैं उससे सन्तुष्ट होती है।

* परीक्षा या प्रलोभन अपनी ही वासनाओं की वजह से अपनी ही इच्छाओं से खींचे जाना है।
* प्रलोभन या परीक्षा तब आती है जब किसी गलत बात के लिए हमारे अंदर इच्छा उत्पन्न होती है और उस इच्छा का इन्कार करने की हमारी इच्छाओं को निर्बल कर देती है।
* हमें उन इच्छाओं या अभिलाषाओं को वश में करना और नियंत्रण में रखना सीखना है।

हम वासना की जड़ की अभिव्यक्तियों को कैसे पहचानते हैं?

शरीर की अभिलाषा

वस्तुओं के लिए, अच्छे भोजन के लिए अनियंत्रित इच्छा

जितनी बार हम दूसरों पर दोष लगाने के लिए किसी की ओर उंगली दिखाते हैं, जो शराब पीता है, सिगरेट फूंकता है, नशा करता है, तब हम उस व्यक्ति को भूल जाते हैं जो अच्छे भोजन की लालसा करता है। दोनों एक ही बात है।

सब वस्तुएं मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं, सब वस्तुएं मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के आधीन न हूंगा। भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इसको और उसको दोनों को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए, और प्रभु देह के लिए है (1 कुरिं. 6:12–13)।

सभी बातें मेरे लिए उचित हैं, परंतु मैं किसी बात के अधीन नहीं रहूंगा। कभी कभी अपने मनपसंद भोजन का आनन्द लेना स्वीकारणीय है, परंतु यदि आप उसके अधीन हैं, तो यह गलत है। “पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इसको और उसको दोनों को नाश करेगा” (1 कुरिं. 6:13अ)।

पौलुस उन लोगों के विषय में लिखता है जिनका ईश्वर उनका पेट है: "उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं" (फिलिप्पियों 3:19)। उनकी भूख या अभिलाषाएं उन पर प्रभुता करती हैं या उन्हें नियंत्रित करती हैं। ये शरीर की अभिलाषा है जिसमें किसी वस्तु के लिए अनियंत्रित चाह है — अच्छा भोजन भी। पुराने नियम में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर के लोग मिस्र देश से बाहर आए थे, उन्होंने अपनी गुलामी से छुटकारा पाया था, लाल समुद्र पार किया था और वे बहुतायत के देश के मार्ग पर थे जहां पर परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वहां दूध और मधु की नदियां बहेगी। और अचानक उन्हें मांस खाने की अनियंत्रित इच्छा उत्पन्न हुई। यह इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह मांस के लिए एक लालसा बन गई।

फिर जो मिली—जुली भीड़ उनके साथ थी वह कामुकता करने लगी; और इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, कि हमें मांस खाने को कौन देगा। हमें वे मछलियां स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी; परंतु अब हमारा जी घबरा गा है, यहां पर इस मन्ना को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता (गिनती 11:4—6)।

एक महिमामय योजना और उद्देश्य को पूरा करते समय, इस्राएली लोग अच्छे भोजन की लालसा करने लगे। अपने शरीर की भूख को मिटाने के लिए उनकी तीव्र लालसा प्रमुख बन गई और परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को पूरा करने से अधिक महत्वपूर्ण हो गई। मैं सोचता हूं कि कितनी बार हमने उपवास और प्रार्थना में समय व्यतीत करने के बजाए उस भोजन को जो हम खाना चाहते हैं प्रथम स्थान दिया है!

इस्राएलियों ने परमेश्वर की परीक्षा ली। बाइबल हमें बताती है कि हम परमेश्वर को न परखें।

और उस ने दिन को तो बादल के खम्भों से और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा उनकी अगुवाई की। वह जंगल में चट्टानों फाड़कर, उनको मानो गहरे जलाशयों से मनमाने पिलाता था। उस ने चट्टान से भी धाराएं निकाली और नदियों का सा जल बहाया। तौभी वे फिर उसके विरुद्ध अधिक पाप करते गए, और निर्जल देश में परमप्रधान के विरुद्ध उठते रहे। और अपनी चाह के अनुसार भोजन मांगकर मन ही मन ईश्वर की परीक्षा की। वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले, और कहने लगे, क्या ईश्वर जंगल में मेज लगा सकता है? उस ने चट्टान पर मारके जल बहा तो दिया, और धाराएं उमण्ड चलीं, परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस भी तैयार कर सकता? यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया, तब याकूब के बीच आग लगी, और इस्राएल के विरुद्ध क्रोध भड़का; इसलिये कि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखा था, न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया। तौभी उस ने आकाश को आज्ञा दी, और स्वर्ग के द्वारों को खोला; और उनके लिये खाने को मान बरसाया, और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। उनको शूरवीरों की सी रोटी मिली; उस ने उनको मनमाना भोजन दिया। उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया, और अपनी शक्ति से दक्खिनी बहाई; और उनके लिये मांस धूलि की नाईं बहुत बरसाया, और समुद्र के बालू के समान अनगिनित पक्षी भेजे; और उनकी छावनी के बीच में, उनके निवासों के चारों ओर गिराए। और वे खाकर अति तृप्त हुए, और उस ने उनकी कामना पूरी की। उनकी कामना बनी ही रही, उनका भोजन उनके मुंह ही में था, कि पमरेश्वर का क्रोध उन पर भड़का, और उस ने उनके हष्टपुष्टों को घात किया, और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया। इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए; और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की प्रतीत न की (भजन 78:14–32)।

इसी के समान दूसरे वचन इस प्रकार हैं:

तब उसने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया; और वह उन्हें गहरे जल के बीच से मानो जगल में से निकाल ले गया। उसने उन्हें बैरी के हाथ के उबारा, और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया। और उनके द्राही जल में डूब गए; उनमें से एक भी न बचा। तब उन्होंने उसके वचनों का

विश्वास किया; और उसकी स्तुति गाने लगे। परन्तु वे झट उसके कामों को भूल गए; और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे। उन्होंने जंगल में अति लालसा की, और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा की। तब उसने उन्हें मुंह मांगा वर तो दिया, परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया (भजन 106:9–15)।

जब शराब, सिगरेट, नशीली दवाएं आदि वस्तुओं के लिए मन में अनियंत्रित इच्छा होती है, तब उसे लत या व्यसन कहते हैं। जब अच्छे भोजन के लिए अदम्य अभिलाषा होती है, तब उसे पेटूपन कहा जाता है। दोनों शरीर की अभिलाषाएं हैं। यीशु इनकी जड़ों पर कुल्हाड़ा मारने आया।

व्यसन के सम्बंध में नारकोटिक्स एनॉनिमस द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक के एक अध्याय "व्यसनी कौन है?" कहा गया है: *"हम में से अधिक लोगों को इस प्रश्न के विषय में दोबारा पूछने की ज़रूरत नहीं है, हम जानते हैं! हमारा संपूर्ण जीवन और विचार किसी न किसी तरह की नशीली दवा पर केंद्रित था – उसे और पाने, उपयोग करने के तरीके और माध्यम खोजना, उपयोग करना और पाना। हम उपयोग करने के लिए जीते थे और जीने के लिए उपयोग करते थे। सरल शब्दों में व्यसनी वह स्त्री या पुरुष है जिसका जीवन नशीली दवाओं से नियंत्रित है। हम ऐसे लोग हैं जो निरंतर और क्रमिक रोग के चंगुल में हैं, जिनका अंत हमेशा एक सा होता है: कैद, किसी संस्था में जाना और मृत्यु। उसमें आगे यह बताया गया है कि व्यसनी व्यक्ति कैसे सोचता है। वहां लिखा है, "हम में से कईयों ने यह नहीं सोचा कि हमें नशीली दवाओं की समस्या है, जब तक कि नशीली दवाएं खत्म नहीं हुई। बाकी लोगों ने जब हमें बताया कि हम समस्याग्रस्त हैं, तब हमें यह यकीन था कि हम सही हैं और दुनिया गलत है। इस विश्वास का उपयोग हमने अपने विनाशकारक आचरण की पैरवी करने हेतु किया।"*

इस प्रकार की वस्तुओं के लिए जिनके मन में अदम्य चाहत होती है, वे सामान्य तौर पर यह कबूल नहीं करते कि उनके जीवन में

समस्या है। जब लोग उन्हें बताते हैं कि उनके जीवन में समस्या है, तब वे सोचते हैं कि बाकी लोग उनके आनंद को चुराना चाहते हैं। इस कारण का उपयोग हम इस बात का समर्थन करने हेतु करते हैं कि बंधन या वासना वास्तव में क्या है।

विवश करने वाली आदतें या इच्छाएं

वासना की दूसरी अभिव्यक्ति विवश करने वाली आदतें या इच्छाएं होंगी। आवश्यकता से अधिक सोने की आदत – उदाहरण के तौर पर, दिन में बारह घण्टे सोना, जबकि आपको वास्तव में केवल आठ घण्टों की ज़रूरत है, बाकी चार घण्टे व्यसन का भाग है। या यदि आपको ऐसा महसूस होता है कि हर सप्ताह या महीने आपको एक सिनेमा देखना है, तो यह विवश करने वाली आदत या इच्छा है। दूसरा उदाहरण, खरीददारी का हो सकता है। यदि आपको लगता है कि हर सप्ताह आपको खरीददारी के लिए जाना ही है, और नहीं तो आप अटपटा महसूस करते हैं और सोचते हैं कि जीवन आगे नहीं बढ़ सकता, तब यह विवश करने वाली आदत, इच्छा और शरीर की अभिलाषा है। यदि आप कुछ विलासिता की वस्तु पाना चाहते हैं, आपको अपने जीवनसाथी से ईनाम मिलना चाहिए, और यह विवशकारी आदत या इच्छा बन जाती है, तब यह शरीर की अभिलाषा है। जो कुछ हमें नियंत्रित करता है और गुलाम की नाईं बंधन में रखता है, वह व्यसन है।

दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फंसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बन्धा रहेगा (नीतिवचन 5:22)।

हमारे पाप हमें कैद करते हैं और हमें दास बना लेते हैं। यीशु ने कहा कि जिसने पाप किया है वह उस पाप का गुलाम है।

यीशु ने उनको उत्तर दिया, मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है (यूहन्ना 8:34)।

वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा तो देते हैं, परंतु आप ही सड़ाहट के दास हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया है, वह उसका दास बन जाता है (2 पतरस 2:19)।

जो बात हम पर विजय पाती है वह हमें बंधन में रखती है। तब हमें कबूल करना होगा कि, वहां पर एक वासना या अभिलाषा है।

यौन विकृति

तीसरी अभिव्यक्ति है यौन विकृति। यौन की योजना परमेश्वर ने बनाई और उत्पन्न की। परमेश्वर ने जिस यौन की योजना बनाई, वह उसके सामने शुद्ध है। वह पवित्र है और विवाह के अंतर्गत जिस तरह उसे सृजा गया और उसकी योजना बनाई गई, उसमें कोई गलत नहीं। परंतु, अप्राकृतिक यौनक्रिया और यौन विलास के वे स्वरूप जिनकी योजना परमेश्वर ने नहीं बनाई, परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। कई मसीही हैं जो यौन के मामले में शरीर की अभिलाषाओं के बंधन में हैं। रोमियों 1:18–32 ये वचन परमेश्वर के क्रोध के विषय के विषय में बोलते हैं।

परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं, इसलिए कि परमेश्वर के शुद्ध का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने यह ज्ञान उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं, इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुध्द मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुध्दिमान जताकर मूर्ख बन गए। और उन्होंने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुध्दता के लिए छोड़ दिया कि वे आपस में

अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया। और जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया, कि वे अनुचित काम करें। इसलिए वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी बुरी बातों के बनाने वाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुध्द, विश्वासघाती, मायारहित और निर्दय हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं (रोमियों 1:18–32)।

बाइबल स्पष्ट रूप से चेतावनी देती है कि समलैंगिकता गलत है। एक पाश्चात्य विचारधारा है जिसके अनुसार लोग सोचते हैं कि परमेश्वर ने समलिंगियों को उत्पन्न किया होगा। यह हमारे देश में भी धीरे धीरे प्रवेश कर रहा है। परमेश्वर ने हम में से किसी को समलिंगी उत्पन्न नहीं किया। यह विकृति है और परमेश्वर की व्यवस्था के विरोध में है। यह अप्राकृतिक है और परमेश्वर ने यौन की योजना इस प्रकार नहीं बनाई। यह पाप है और इसे हम छूट नहीं दे सकते। हम यह नहीं कह सकते कि समलैंगिकता स्वीकारणीय है, जबकि परमेश्वर की दृष्टि में यह स्वीकारणीय नहीं है। रोमियों 1:28 में लिखा है, "जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना नहीं चाहा, तब परमेश्वर ने उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया।" जब लोग अपनी ही मनमानी करने का आग्रह करते हैं, अप्राकृतिक इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश में लगे

रहते हैं, तब परमेश्वर दूर हो जाता है और व्यक्ति का मन निकम्मा हो जाता है (अमान्य, तिरस्कृत, निरूपयोगी और बेकार)।

जब लोगों के मन निकम्मे हो जाते हैं, तब उनका मन विचार प्रक्रिया में अन्धकारमय हो जाता है और वे मानने लगते हैं कि उनकी अप्राकृतिक जीवनशैली वास्तव में सामान्य है। उदाहरण के तौर पर, समलिंगी सोचते हैं कि उन्हें इसी तरह बनाया गया है, जबकि बाइबल इसे पाप कहती है! जब कोई अपने विचारों को पूरा करना चाहता है, तब बाइबल कहती है कि परमेश्वर दूर हट जाता है और कहता है, "तुम यह करना चाहते हो, करो। यदि तुम अपनी मनमानी करना चाहते हो, करो।" यौन विकार, अनैतिकता, विवाहपूर्व यौन, विवाह बाह्य यौन, व्यभिचार, समलैंगिकता और लुचपन परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय है।

यौन विकृति के अन्य स्वरूप भी हैं, जैसे यौन अनुभवों की कल्पना करना। आप शायद शारीरिक रीति से वह कार्य नहीं कर रहे हैं, परंतु आप अपने कमरे में बैठकर हर प्रकार की बातें सोचते हैं। यह यौन विकृति है। यह शरीर की अभिलाषा है और परमेश्वर के सन्मुख अस्वीकारणीय है। जीवनसाथी के साथ यौन न करते हुए भी जब आप किसी साधनों का उपयोग कर यौन का आनंद लेते हैं, यह भी यौन विकृति है। हस्तमैथून के शिकार होना (आदतन हस्तमैथून) यौन विकृति का दूसरा उदाहरण है और शरीर की अभिलाषा है। यह आपको बंधन में रखता होगा और आपको छुटकारा पाने की ज़रूरत है। परमेश्वर आपके जीवन की इन समस्याओं से निपटना चाहता है। जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है"

आंखों की अभिलाषा

अश्लीलता

"सब प्रकार की बुराई से बचे रहो" (1 थिस्सल. 5:22)। कई विश्वासी अश्लीलता के शिकार बन जाते हैं क्योंकि इस प्रकार की सामग्री ने

हमारे घरों में प्रवेश किया है। सुबह के समाचार पत्रों में भी नग्न स्त्रियों के विज्ञापन और स्तंभ होते हैं! अब समाचार पत्रों में केवल समाचार नहीं होते, परंतु प्रायः हर पृष्ठ पर नग्न स्त्रियों के चित्र भी होते हैं। इन चित्रों को देखे बिना समाचार पढ़ना मुश्किल है। आज हम जहां कहीं देखते हैं, वहां, बिलबोर्ड, पोस्टर, इंटरनेट आदि पर इस प्रकार के चित्र पाते हैं। इस प्रकार कई लोग अश्लीलता के चक्कर में पड़ जाते हैं और हमें उसके विरोध में खुद की रक्षा करने की ज़रूरत है क्योंकि अश्लीलता आंखों की अभिलाषा है।

गंदे विचार और अनैतिक कल्पनाएं

लोग गंदे विचारों और अनैतिक कल्पनाओं में आनंद मनाते हैं। गंदे विचार और कल्पनाएं आंखों की अभिलाषा का एक भाग हैं। बाइबल हमें प्रोत्साहन देती है कि हम उन बातों पर मन लगाएं जो शुद्ध और पवित्र हैं :

निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो (फिलिप्पियों 4:8)।

सुंदर स्त्री और पुरुषों का आकर्षण

यह हम सबके साथ होता है और यह आंखों की अभिलाषा है। कुछ लोग अपना सिर सीधा नहीं रख सकते। जितनी बार सुंदर व्यक्ति जाता है, वे गर्दन घुमाकर देखने लगते हैं। “परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री को कुदृष्टि से देखे वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका” (मत्ती 5:28)।

लालच

लालच जो दूसरे व्यक्ति के पास होता है, उसे चाहता है। बाइबल चेतावनी देती है कि लालच या लोभ मूर्तिपूजा के समान है। हम हमेशा

उस व्यक्ति की ओर उंगली दिखाते हैं जो किसी चित्र, प्रतिमा या मूरत के आगे सिर झुकाता है। ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि अपने दिल में लालच करना भी मूर्तिपूजा है। जो किसी और के पास है उसे पाने की तीव्र इच्छा जब आपको होती है, तब यह लालच है। यह मूर्तिपूजा है।

क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े तक सब के सब लालची हैं; और क्या भवि□ष्यद्वक्ता क्या याजक सब के सब छल से काम करते हैं (यिर्मयाह 6:13)।

इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है (कुलुस्सियों 3:5)।

लालच मूर्तिपूजा का एक स्वरूप है क्योंकि परमेश्वर के लिए हमारी इच्छा से अधिक किसी और वस्तु की चाह को वह प्राथमिकता देने की अनुमति देता है। परमेश्वर और हमारे बीच, और परमेश्वर के साथ आत्मा और सच्चाई में हमें जो रिश्ता रखना है उसके बीच जो कुछ आता है, वह मूरत है। यह कोई चित्र या प्रतिमा हो सकती है या वह किसी वस्तु के लिए मानसिक लालसा हो सकती है। परमेश्वर इसे आत्मिक व्यभिचार मानता है। मेरे जीवन में जो कुछ परमेश्वर का स्थान लेता है वह मूरत है और यह कोई व्यक्ति, भोजन, यौन, करियर, खेलकूद, धर्म या आराधना का कोई रूप हो सकता है।

परमेश्वर कहता है, “तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास–दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना” (निर्गमन 20:17)। यदि मैं किसी और की वस्तु को देखकर कहता हूं, “मुझे वह चाहिए,” तो यह लालच है। यीशु हमें चेतावनी देता है कि हम ऐसे लालच से सावधान रहें: और उसने उनसे कहा, “चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता” (लूका 12:15)।

धन, अधिकार, ख्याति, पद, और प्रभाव की चाह

धन, अधिकार, ख्याति, पद और प्रभाव की चाह अपने आपमें हमारे उपयोग के साधनमात्र हैं। परंतु इस प्रकार की वस्तुओं के लिए अनुचित लगाव या अनियंत्रित चाह वासना है। अदन की वाटिका में शैतान ने हव्वा के जीवन में बिल्कुल इसी प्रकार का प्रलोभन लाया। "इसलिये जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया" (उत्पत्ति 3:6)। यह तीन प्रकार का मोह थाः आंखों की अभिलाषा (देखने में मनभाऊ), शरीर की अभिलाषा (खाने में अच्छा) और जीविका का घमण्ड (बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य)। अतः, इस प्रकार की वस्तुओं के लिए तीव्र इच्छा रखने से हमें अपनी रक्षा करना है।

संसारिकता

संसार की बातों के लिए आकर्शण हमें परमेश्वर का शत्रु बनाता है। यह आंखों की अभिलाषा और शरीर की अभिलाषा का अन्य क्षेत्र है।

तुममें लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख–विलासों से नहीं, जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग–विलास में उड़ा दो। हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है (याकूब 4:1–4)।

जो कोई इस संसार का मित्र है, वह परमेश्वर का शत्रु है। मैं यह नहीं कहता कि इस संसार में हमें किसी वस्तु की बिल्कुल चाह नहीं रखनी चाहिए। अर्थात्, हमें गाड़ी की, रहने के लिए घर आदि की ज़रूरत होती है। परमेश्वर द्वारा हमें दी गई वस्तुओं का आनन्द उठाने

में कुछ भी गलत नहीं है (1 तीमुथियुस 6:17), परंतु इस संसार की वस्तुओं के लिए हमारी चाहत यदि अनियंत्रित इच्छा बन जाती है, तब हम "इस संसार के मित्र हैं" और परमेश्वर के मित्र नहीं हो सकते।

लोभ

लोभ अधिक पाने की तीव्र लालसा है। "क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है"(1 तीमुथियुस 6:10)। पैसा या धन अपने आपमें गलत नहीं है। परंतु उसके लिए प्रेम और तीव्र लालसा, गलत है। परमेश्वर की इच्छा अपने लोगों को आशीष देने, उन्हें सम्पन्न बनाने की है। इस विशय में कोई संदेह नहीं है। परंतु परमेश्वर की आशीषों के लिए हमारी चाहत में, कई लोग वासना के जोखिम भरे क्षेत्र में भटक गए हैं। कलीसिया में यह बात व्यापक बन गई है। हम बड़ी कार, बड़ा घर, अधिक धन, अधिक सफलता, बड़ी सेवकाई, बड़ी मान्यता, जीवन में ऊंचे पद आदि की मांग करते हैं, इस बहाने से कि हम परमेश्वर की आशीषों को मांग रहे हैं। "और," "बड़े," और "बेहतर" की खोज में, हमने अनजाने में ऐसी वस्तुओं के लिए अनुचित लगाव उत्पन्न किया है। इनके लिए चाह अत्याधिक और अनियंत्रित बन गई है। हम ईश्वरीय खोज और स्वस्थ चाहत से दूर हो गए हैं, और वासना के स्थान पर आ पहुंचे हैं। यह खतरनाक बात है! हमें ऐसे स्थान पर आना है जहां पर हम यह जानते हैं कि "पर सन्तोश सहित भक्ति बड़ी कमाई है" (1 तीमुथियुस 6:6)।

हमें परमेश्वर की ऊंची बुलाहट, बड़े स्वप्न और परमेश्वर के महान उद्देश्यों को खोजना है और इन उद्देश्यों को पूरा करने हेतु जिन साधनों का हम उपयोग करते हैं – धन, प्रभाव, अधिकार, पद जैसे साधनों के लिए लगाव उत्पन्न नहीं होने देना है। पैसा अपने आप में गलत नहीं है। वस्तुतः, हमें पैसों की ज़रूरत होती हैं। हम काफी पैसों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और विश्वास करते हैं, परंतु पैसा अपने

आपमें हमारा लक्ष्य नहीं है। यह हमारे बिलों की अदायगी करने का साधन है ताकि हम सुसमाचार प्रचार कर सकें और आत्माओं को उद्धार दिला सकें और परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर सकें।

परंतु मसीह की कलीसिया में परमेश्वर की आशीषों की खोज करने की चाहत उत्पन्न हुई है। हम लालच, लोभ और वासना के क्षेत्र में पहुंच गए हैं। हम वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं और परमेश्वर द्वारा हमें दी गई बुलाहट को और स्वप्नों को भूल गए हैं। “वस्तुएं” केवल उसके साधन हैं जिनका उपयोग हम परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करने हेतु करते हैं।

वासना की जड़ की अभिव्यक्ति

* वस्तुओं के लिए अनियंत्रित इच्छा
* विवश करने वाली आदतें या इच्छा
* यौन विकृति
* अश्लीलता
* गंदे विचार और अनैतिक कल्पनाएं
* सुंदर स्त्री और पुरुशों के प्रति आकर्शण
* लालच
* धन, अधिकार, ख्याति, पद, और प्रभाव के लिए चाहत
* संसारिकता
* लोभ

जवानी की अभिलाषाएं

बाइबल हमें चेतावनी देती है, “जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उनके साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल मिलाप का पीछा कर” (2 तीमुथियुस 2:22)। जिन अभिलाषाओं में जवान फंसते हैं, उन अभिलाषाओं की जब बात आती है, तब एक बड़ी सूची सामने आती है। उदाहरण के तौर पर भक्तिहीन

संगीत। आधुनिक संगीत के कई प्रकार लत लगाने वाले हैं और उनकी विशय स्तु विनाशकारी है। वे उन्नति प्रदान नहीं करते, परंतु जवान लोग कह सकते हैं, "मुझे उसे सुनना है। जब मैं कॉफी न लूं और वह संगीत शुरू न करूं, तब मैं अपने दिन की शुरूवात नहीं कर सकता।" यह जवानी की अभिलाषा है। यदि यह आपको होना ही है, तो यह वासना है।

संगीत, टी.व्ही., सिनेमा, एक्स–बॉक्स, प्ले स्टेशन, इंटरनेट, चैट रूम्स सभी आधुनिक समय की जवानी की अभिलाषाएं हैं। इन वस्तुओं के विषय में गलत कुछ नहीं हैं। परंतु यदि आपको इन बातों की लत है, तो जवानी की अभिलाषा ने आपको पकड़कर रखा है। यदि आप चैट रूम में या इंटरनेट पर ब्राऊज़ करते हुए एक घण्टा बिताते हैं, और ये बातें आपके दिन को पूरा करने के लिए ज़रूरी बन जाती हैं, तो यह जवानी की अभिलाषा है। जिन जवान लोगों को यह यकीन नहीं है कि वे सही कर रहे हैं या गलत, उन्हें सावधानी का एक शब्द – "यदि आपके मन में संदेह है तो उसे त्याग दें।" अवसर क्यों लें? ऐसी बातों के साथ व्यवहार भी न करें। हर प्रकार की बुराई से दूर भागें। बुराई के हर स्वरूप से परहेज रखें (1 थिस्सल. 5:22)।

वासना की जड़ के परिणाम

हमारे जीवनों में वासना की जड़ के कई परिणाम हैं। नीचे उनमें से कुछ की सूची दी गई है :

वासना वचन को दबा देती है

यदि लोग वासना में चलते रहे, चाहे वह शरीर की अभिलाषा हो, या आंखों की अभिलाषा हो, वह हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन के प्रभाव को नकारात्मक कर देती है। मरकुस 4:19 में यीशु मसीह कहते हैं, "और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है, और वह निष्फल रह जाता है।" आप गिरजाघर में बैठकर सालों साल परमेश्वर का वचन सुनकर भी निष्फल हों और किसी प्रकार फल उत्पन्न न करें। बाइबल कहती

है कि संसार की अन्य वस्तुओं के लिए लालसा वचन को दबा सकती है और आपके जीवन में उसके प्रभाव को शून्य कर सकती है।

वासना बंधन को ले आती है

जिन वस्तुओं की हम लालसा करते हैं उनके हम गुलाम बन जाते हैं और अपनी स्वतंत्रता खो बैठते हैं। रोमियों 6:12 में पौलुस कहता है, “इसलिए पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो।” आप जिन बातों का पालन करते हैं, उसके आप दास या गुलाम हैं। “क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो; और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?” (रोमियों 6:16)।

वासना हमारे प्राणों और शरीरों का विनाश ले आती है

वासना या शरीर की अभिलाषाएं आपके प्राण, मन, इच्छा और भावनाओं के विरोध में युद्ध करती हैं। “हे प्रियो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युध्द करती हैं, बचे रहो” (1 पतरस 2:11)। यदि आप गलत यौनाचार में लिप्त हैं, और कहते हैं, “मैं अपने मन को एकाग्र नहीं कर सकता,” और कुछ और करते समय आपका मन भटकता है, तो यह शरीर की अभिलाषा है जिसे आपके जीवन में पूरी छूटी दी गई है, और यही इसकी वजह है। वासना हमारे मनों, इच्छाओं और भावनाओं के विरोध में युद्ध करती है और हमारे प्राणों को निर्बल बनाती है, हमारी एकाग्र होने की क्षमताओं को, हमारी स्मरण रखने की योग्यताओं को और उस बुद्धि को कमज़ोर कर देती है जो परमेश्वर ने हमें दी है। यह शरीर के लिए भी हानिकारक है। “व्यभिचार से बचे रहो। जितने और पाप मनु य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है” (1 कुरिं. 6:18)। जब आप यौन अनैतिकता में लिप्त हैं, तब आप अपने शरीर के विरोध में पाप कर रहे हैं और शरीर के नियमों का उल्लंघन कर रहे है।

वासना की समस्या का गहरा अवलोकन

इस पाठ के आरम्भ में मैंने कहा है कि जब हम अपनी ही अभिलाषाओं में और अपनी ही वासनाओं की ओर खींचे जाते हैं, तब हम परीक्षा में पड़ते हैं। परंतु कभी कभी, समस्या स्थूल रूप से जो दिखाई देती है, उससे अधिक गंभीर हो सकती है और अन्य कई कारणों से हो सकती है।

घायल मन

घायल मन व्यक्ति को अतिरिक्त भोगविलास की ओर ले जा सकता है। जो लोग भावनात्मक रूप से आहत होते हैं – शायद जिसने अपने प्रियजनों को खोया है, तलाक का शिकार हुए हैं, जिसके जीवन में आर्थिक समस्या है, जो दिवालिया हो गया है या जिनके जीवनों में कुछ गंभीर बात घटी है – वह भोगविलास में लिप्त हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में, हमें पहले मूल कारण को दूर करना है और उस व्यक्ति के घायल हृदय के लिए चंगाई प्रदान करना है। नौकरी खोने के बाद लोग शराब पीने लगते हैं या जिस प्रिय मित्र पर वे निर्भर थे – शायद उनका जीवनसाथी – उसने उन्हें त्याग दिया और इस कारण वे भावनात्मक रूप से आहत हो गए थे। इस बात ने शायद उन्हें अति भोगविलास की ओर और गलत लतों की ओर ढकेल दिया – शराब, सिगरेट, या अनैतिकता। हमें पहले समस्या का मूल कारण दूर करना होगा। “रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से सम्भलता है; परन्तु जब आत्मा हार जाती है तब उसे कौन सह सकता है?” (नीतिवचन 18:14)। घायल मन – शारीरिक घाव नहीं, परंतु गहरा मन का घाव चंगा होना ज़रूरी है।

कुछ वासनाएं दुष्टात्माओं द्वारा प्रेरित होती हैं

पवित्र शास्त्र बताता है कि विभिन्न प्रकार की दुष्टात्माएं हैं जो पापमय आचरण को प्रेरित करती हैं। कुछ वासनाएं दुष्टात्माओं द्वारा प्रेरित होती हैं। हम आपको डराने के लिए नहीं, परंतु आपको सुसज्जित करने हेतु दुष्टात्माओं के विषय में बोल रहे हैं। आपकी अपनी इच्छाओं

के अलावा, बातें इस हद तक बढ़ गई होंगी जहां पर दुष्टात्माएं आपको प्रेरित कर रही हैं और इन बातों को आपके जीवनों में मज़बूत गढ़ बना रही हैं। बाइबल दुष्टात्माओं के कई प्रकार के विषयों में बताती है।

कुछ अशुद्ध आत्माएं हैं जो अनैतिक जीवनशैली को उत्पन्न करती हैं।

जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं (मत्ती 12:43)।

कुछ विकृत आत्माएं हैं जो सब प्रकार की विकृति ले आती हैं या परमेश्वर ने मनुष्य या वस्तुओं को जिस तरह नियोजित किया है, उसका उल्लंघन करने हेतु व्यक्ति को प्रेरित करती हैं।

यहोवा ने उसमें भ्रमता उत्पन्न की है; उन्होंने मिस्र को उसके सारे कामों में वमन करते हुए मतवाले की नाईं डगमगा दिया है (यशायाह 19:14)।

ऐसा लगता है कि यह वचन यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने विकृत या भ्रमित आत्मा को भेजा। परंतु जब हम संपूर्ण वचन देखते हैं, तब हम जानते हैं कि परमेश्वर को पृथ्वी पर अपनी इच्छा को पूरा करने हेतु विकृत आत्माओं की सहायता की ज़रूरत नहीं है। इस वचन का सही अर्थ यह है कि जब परमेश्वर ने अपने लोगों के निरंतर पापों को (इस मामले में, मिस्र) देखा, तब उसने अपनी ईश्वरीय सुरक्षा को हटा दिया। इस कारण लोगों के पापों की वजह से आकृष्ट हुई विकृत आत्माओं को उनके जीवनों में प्रवेश मिल गया और उन्होंने लोगों को अपने बंधन में डाल दिया।

वेश्यापन की आत्माएं हैं

मेरी प्रजा के लोग काठ के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा ने उन्हें बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं (होशे 4:12)।

उनके काम उन्हें अपने परमेश्वर की ओर फिरने नहीं देते, क्योंकि छिनाला करनेवाली आत्मा उनमें रहती है; और वे यहोवा को नहीं जानते हैं (होशे 5:4)।

वेश्यापन की आत्माएं लोगों को परमेश्वर से दूर कर देती हैं और उन्हें अन्य बातों का अनुसरण करने हेतु प्रेरित करती हैं, इस प्रकार उन्हें आत्मिक व्यभिचार करने पर मज़बूर करती हैं।

एक बंधुवाई की आत्मा है जो लोगों को पाप के बंधन, विवश करने वाली आदतों और लतों के बंधन में डाल देती है।

क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं (रोमियों 8:15)।

अनाज्ञाकारिता की आत्मा है, जो सत्य के विरोध में अनाज्ञाकारिता और विद्रोह का कारण होती है।

जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है (इफिसियों 2:2)।

इस संसार की आत्मा है जो संसार के सदृश्य बनाती है।

परन्तु हमने संसार का आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं (1 कुरिन्थियों 2:12)।

भरमानेवाली आत्माएं हैं जो इस संसार की वस्तुओं से लोगों को फंसाती और आकर्षित करती हैं।

परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कई लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे (1 तीमुथियुस 4:1)।

और दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे (2 तीमुथियुस 3:13)।

विभिन्न प्रकार की दुष्टात्माएं हैं जो हमारे चारों के संसार में कार्यरत हैं। दुख बात की यह है कि इस प्रकार की आत्माओं को अपने जीवन प्रवेश देना विश्वासियों के लिए संभव है।

विश्वासी के जीवन में गढ़ हो सकते हैं

नया जन्म प्राप्त अन्यान्य भाषा बोलने वाले गिरजाघर जानेवाले विश्वासियों के जीवन में गढ़ हो सकते हैं – प्राण के वे क्षेत्र जो दुष्टात्माओं के कब्जे और नियंत्रण में होते हैं। पौलुस गढ़ों के विषय में बोलता है : "क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिए हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह की आज्ञाकारी बना देते हैं। और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें" (2 कुरिन्थियों 10:4–6)।

भ्रष्ट मन शैतान का गढ़ होता है – ऐसा मन जो बुरे को भला और भले को बुरा समझता है। जो मन संसारिकता में लगा रहता है वह विश्वासी के जीवन में शैतान के लिए जगह पाता है – हमारे विचार जीवन के क्षेत्र जिन्हें हम ज्योति में न लाते हुए अन्धकार में रखते हैं। वे क्षेत्र जहां परमेश्वर के वचन के सत्य के प्रति समर्पित करने के बजाय, हम झूठ को अपनाते हैं, उन्हीं क्षेत्रों में शैतान हमें बांधकर रखता है। मैं एक ऐसे व्यक्ति से बातें कर रहा था जिसने कुछ समय पहले नशीली दवाओं का सेवन किया था और मैंने उससे पूछा, "आप ऐसा क्यों करते हैं?" और उसने उत्तर दिया, "मैं' कुछ गलत नहीं कर रहा। मैं आपको दुख नहीं पहुंचा रहा हूं, तो आप क्यों कहते हैं कि यह गलत है?" यह तार्किक विचार है, परंतु फिर भी यह गढ़ है। वह सोचता है, "जब तक मेरे द्वारा किसी को दुख नहीं पहुंचता, तब तक नशीली दवाओं का लेना ठीक है।"

गढ़ क्या हैं? गढ़ हमारे मनों में विचारों के वे नमूने हैं जहां पर हम पाप को सहने लगे हैं, जहां पर हमने सत्य के साथ समझौता किया है और झूठ के साथ सत्य का त्याग किया है, इस प्रकार शैतान को हमारे मनों में प्रभाव का स्थान और बचाव की जगह दी है। आप सोच सकते हैं, "जब तक पासबान नहीं देखता, यह मेरे लिए उचित है।" अतः, आप उन कामों को गलत नहीं सोचते जिन्हें आप सप्ताह के दौरान करते हैं और रविवार की सुबह "हालेलुय्याह" गाते हुए दोषी महसूस नहीं करते!

यह गढ़ है, विचार का ढांचा है जो हमें यह सोचने पर मज़बूर करता है कि यह उचित है और हमें पाप को सहने पर बाध्य करता है। हम शैतान को अपने जीवन में प्रभाव के स्थान देते हैं। उन विचारों के ढांचों की वजह से जिन गढ़ों को हमने अपने मनों में अपनाया है या अनुमति दी है, उनके माध्यम से पापमय गतिविधियों का हमारे अंदर बहाव हुआ है। यह सच है कि मसीही व्यक्ति दुष्टात्मा से पीड़ित नहीं हो सकता क्योंकि पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं में पहले से वास करता है। परंतु, मसीही व्यक्ति बंधन में रह सकता है, पीड़ित हो सकता है, सताया जा सकता है और उसके मन या शरीर में ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं जहां दुष्टात्माओं का कब्जा हो – जब वह निरंतर गलत विचारों और आचरणों के द्वारा उन्हें प्रवेश देता है। उदाहरण के लिए, यदि आप लगातार अश्लीलता में लिप्त रहते हैं, तब माह में एकाध बार वाली आदत एक नियमित साप्ताहिक आदत बन जाएगी और जल्द ही आप पाएंगे कि आप उसके बगैर रह नहीं सकते। क्या हुआ? आपके प्राण के उस क्षेत्र में अशुद्ध आत्माओं का निवास है, जो आपके जीवन में अनियंत्रित अनैतिक आचरण का कारण हैं। अतः अब यह कभीकभार की आदत नहीं – यह बंधन है और एक गढ़ है। नियमित पाप, अनियंत्रित वासना, विवशकारी आचरण के क्षेत्र अत्यंत संभवनीय क्षेत्र हैं जो दुष्टात्माओं द्वारा प्रेरित हैं। पापमय आदतें सदृश्य दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन जाती हैं जो विश्वासी के जीवन में शैतान का गढ़ बन जाता है और उस व्यक्ति को अपने बंधन में रखता है।

यह कहकर हम हर पापमय आचरण के लिए खुद को छोड़कर शैतान पर दोष लगाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। यह न कहें, "शैतान मुझसे यह करा रहा है।" आपने द्वार खोला और आपने शत्रु को प्रवेश दिया। आप ज़िम्मेदार हैं और इस कारण शैतान को उसके लिए दोष न दें। हमें अनैतिक जीवनशैली की गंभीरता को समझना है। जब व्यक्ति अनैतिक आचरण में बना रहता है, तब वह अपने मन में, भावनाओं में और शरीर में जगह बनाने के लिए शत्रु को प्रवेश देता है। इसलिए हमें हमारे जीवनों में शत्रु को प्रवेश देने से खुद को बचाने की ज़रूरत है।

गढ़ हमारे मनों में विचारों के वे नमूने हैं जहां पर हम पाप को सहने लगे हैं, जहां पर हमने सत्य के साथ समझौता किया है और झूठ के साथ सत्य का त्याग किया है, इस प्रकार शैतान को हमारे मनों में प्रभाव का स्थान और बचाव की जगह दी है।

वासना की सामर्थ को हम कैसे तोड़ें?

सत्य को ग्रहण करें

कहें, "हां, मैं सत्य को ग्रहण करना चाहता हूं।" सत्य क्या है?

और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा, परन्तु जलते जलते। क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है? (1 कुरिन्थियों 3:15,16)।

शरीर को पवित्र होना है। उसे आंखों की अभिलाषा से और शरीर की अभिलाषा से मुक्त रहना है। हमारे शरीरों और मनों में कुछ भी अनैतिक या अशुद्ध नहीं होना चाहिए। हमारे शरीर यौन अनैतिकता नहीं हैं।

भोजन पेट के लिए, और पेट भोजन के लिए है, परन्तु परमेश्वर इसको और उसको दोनों को नाश करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन् प्रभु के लिए, और प्रभु देह के लिए है। और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा। क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह मसीह के अंग है? तब क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं? कदापि नहीं! क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता है, क्योंकि वह कहता है कि वे दोनों एक तन होंगे? और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है। व्यभिचार से बचे रहो। जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो (1 कुरिन्थियों 6:13–20)।

हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम पवित्र हों।

क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो, अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो। और तुममें से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान जो परमेश्वर को नहीं जानतीं (1 थिस्सलुनीकियों 4:3–5)।

हमें कबूल करना, पश्चाताप करना और त्याग देना है

हमें उन द्वारों को बंद करना होगा जिन्हें हमने शैतान के लिए खोला है। गिरजाघर में पश्चाताप करना, आंसू बहाना, उन्हें पोंछना और द्वार से बाहर निकलकर वापस उन्हीं बातों की ओर जाना आसान है जिनसे हमें छुटकारा पाने की ज़रूरत है। तब हमारा पश्चाताप किसी काम का नहीं रहता।

शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करें

वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो (रोमियों 13:14)।

पश्चाताप करने के बाद इस बात का ध्यान रखें कि आपने हर द्वार बंद किया है। आपके जीवन में शैतान को अवसर न दें। सुबह का अखबार आपको अश्लीलता की ओर ढकेलता है, तो वह अखबार बंद कर दें। शायद आप कहेंगे, "लेकिन मैं समाचार पढ़ना चाहता हूं।" सब कुछ जानकर इस संसार में रहने और नर्क जाने के बजाय अज्ञान रहकर स्वर्ग को जाना उचित है। यदि आपका केबल टी.व्ही. आपको अपने सोफे पर घण्टों बिताने पर मज़बूर करता है, तो उसे हटा दें। आप कहते हैं कि समाचार देखने की उसकी ज़रूरत है, परंतु यदि आप बाकी सारी बातें देखते हैं, तो बिना केबल टी.व्ही. के स्वर्ग जाना बेहतर है। यीशु ने कहा, "और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए" (मत्ती 5:30)। वह शाब्दिक भौतिक वस्तुओं के विषय में नहीं बोल रहा था, परंतु उन वस्तुओं के विषय में जो हमें पाप करने पर मज़बूर करती हैं, इन वस्तुओं से हमें कठोर परहेज़ करना है। शरीर के लिए उपाय न करें। एक बार पश्चाताप करने के बाद शत्रु को प्रवेश करने का फिर अवसर न दें। अन्यथा आप पहले से सात गुणा अधिक बुरी दशा में पड़ जाएंगे। (यदि आप उस विषय में गंभीर नहीं हैं, तो पश्चाताप न करें।)

कुछ व्यवहारिक कार्य करें

इस बात को समझें कि कुछ क्षेत्रों में आपको धर्मी लोगों की सहायता, सहारा और बल की ज़रूरत है। इस ज़रूरत को पहचाकर खुद को विजयी जीवन जीने हेतु सही लोगों से घेर लेने में कुछ भी गलत नहीं है। हमें एकदूसरे की ज़रूरत है। इसी एक कारण से हमारी कलीसियाओं में सेल ग्रूप होते हैं।

कुछ व्यवहारिक बातें आप कर सकते हैं :

स्त्रियों के प्रति अपने मन में वासना की भावना न रखें।

उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर; वह तुझे अपने कटाक्ष से फंसाने न पाए (नीतिवचन 6:25)।

ओ कुछ आपके पास है, उसी में सन्तुष्ट रहें।

पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है (1 तीमुथियुस 6:6)।

हम अभक्ति और सांसरिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं

और हमें चिताता है कि हम अभक्ति और सांसरिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं (तीतुस 2:12)।

आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।

परंतु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है (गलातियों 5:16,17,24)।

अपने हृदय को परमेश्वर के वचन पर लगाएं और आप लालच से छुटकारा पाएंगे।

मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे (भजन 119:36)।

शैतान धर्मी जीवन से डरता है – ऐसा जीवन जो पवित्र और शुद्धता में पूर्ण रूप से परमेश्वर के प्रति अधीन हो। जो लोग अत्यंत अभिषिक्त और वरदान प्राप्त हैं, और उनके जीवन में कुछ पालतू पाप हैं, तो उनसे वह नहीं डरता। बल्कि वह उनसे प्रसन्न होता है क्योंकि अब वह युक्तिपूर्ण ढंग से उस व्यक्ति को गिरा सकता है और उसके पतन से संपूर्ण मसीही समुदाय के विनाश को ले आ सकता है। परंतु धर्मी जीवन उसे अभेद्य लगता है – वह ऐसी सुरक्षा का कवच है जिसमें वह प्रवेश नहीं कर सकता।

इन बातों के द्वारा वासना की सामर्थ को तोड़ दें:

* सत्य को ग्रहण करें
* हमें कबूल करना, पश्चाताप करना और त्याग देना है
* शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करें
* विजय पाने हेतु धर्मी लोगों से सहायता, सहारा और बल पाना
* स्त्रियों/पुरुषों के प्रति अपने मन में वासना की भावना न रखें।
* ओ कुछ आपके पास है, उसी में सन्तुष्ट रहें।
* हम अभक्ति और सांसरिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।
* आत्मा के अनुसार चलें, ताकि तुम शरीर की लालसा पूरी न कर पाओ
* अपने हृदय को परमेश्वर के वचन पर लगाएं और लालच से छुटकारा पाएंगे।

प्रार्थना, अंगीकार, पश्चाताप और परित्याग

स्वर्गीय पिता, मैं यीशु के नाम में आपके पास आता हूं। मैं अंगीकार करता हूं कि मेरे जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें मैंने पूर्ण रूप से यीशु

मसीह की प्रभुता के अधीन नहीं किया है – स्वार्थ के क्षेत्र, ईर्ष्या के क्षेत्र, घमण्ड के क्षेत्र, वासना के क्षेत्र और पाप को सहन लेना। आज, यीशु के नाम में मैं आपसे बिनता करता हूं कि मुझे क्षमा करें और यीशु के बहुमूल्य लोहू से शुद्ध करें।

(विशिष्ट पापमय आदतों, आचरण, व्यसन आदि का नाम लेकर उन्हें प्रभु के सामने कबूल करें और पश्चाताप करें)।

पवित्र आत्मा की सामर्थ से और यीशु के नाम में, मैं मेरे जीवन पर शैतान के हर प्रभाव को बांध देता हूं। मैं अशुद्धता की आत्माओं और विकृति की आत्माओं को दुत्कारता है और उन्हें मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं देता। मैं वेश्यापन की आत्माओं को दुत्कारता हूं और मेरे जीवन के प्रभु परमेश्वर से दूर भटक जाने से इन्कार करता हूं। मैं प्रभु यीशु मसीह के प्रति पूर्ण और संपूर्ण वफादारी की प्रतिज्ञा लेता हूं। मेरे जीवन में परमेश्वर का स्थान लेने वाली किसी भी बात का अनुसरण करने से मैं इन्कार करता हूं। मैं मूर्तिपूजा के हर स्वरूप का त्याग करता हूं और उसे गिरा देता हूं। मैं सच्चे और जीवित परमेश्वर की किसी भी प्रतिमा को अनुमति देने से इन्कार करता हूं – परंतु केवल आत्मा और सच्चाई में परमेश्वर की आराधना करने का चुनाव करता हूं।

मैं बंधुवाई की आत्मा को दुत्कारता हूं। यीशु के नाम में, यीशु के लोहू से और पवित्र आत्मा की सामर्थ से, मेरे जीवन में पाप के हर बंधन को मैं तोड़ देता हूं। मैं हर विवश करने वाली आदत, अनियंत्रित इच्छा और लत को नाश करता हूं। यीशु के नाम में, मै स्वतंत्र हूं, क्योंकि मसीह ने मुझे स्वतंत्र किया है!

मैं अनाज्ञाकारिता की आत्मा को दुत्कारता हूं और सत्य के विरोध में अनाज्ञाकारिता और विद्रोह का इन्कार करता हूं। मैं सत्य को ग्रहण करता हूं और परमेश्वर के वचन के सत्य के प्रति खुद को अधीन करता हूं। मैं इस संसार की आत्मा को दुत्कारता हूं और इस संसार के

सदृश्य बनने से इन्कार करता हूं। पवित्र आत्मा की सहायता से मैं परमेश्वर के वचन के अनुरूप चलने का चुनाव करता हूं। मैं भरमाने वाली आत्माओं के प्रभाव का इन्कार करता हूं और इस संसार के आकर्षणों के वश में होने से इन्कार करता हूं।

पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा, मैं घोषित करता हूं कि प्रत्येक गढ़ का नाश हो और वह मेरे जीवन से उसकी बुनियाद से हटाया जाए। मैं प्रभु यीशु को अनुमति देता हूं कि वह उन क्षेत्रों में अपने सत्य और धार्मिकता को स्थापित करे जहां पर ये गढ़ वर्तमान हैं। परमेश्वर का वचन, उसकी उपस्थिति और उसका सत्य मात्र मेरे जीवन में गढ़ होंगे। पवित्र आत्मा मुझे सब सत्य, शुद्धता, पवित्रता की ओर ले जाता है। यीशु के नाम में। आमेन!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक / बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

यद्यपि परमेश्वर के वचन की तुलना मीठास से भरे मधु से, प्रति दिन की रोटी से जिसका हम आनंद लेते हैं, ताज़गी लाने वाली वर्षा से, राह दिखाने वाले दीपक से की गई है, वह उस आग के समान भी है जो भूसे को जला देती है, चट्टान को टुकड़े टुकड़े करने करने वाले हथोड़े के समान और जीवन और आत्मा को आरपार छेदने वाली दोधारी तलवार के समान भी है। हमारे जीवन के उन क्षेत्रों पर जिन्हें शुद्धता पाने की ज़रूरत है, हथोड़े, आग और तलवार के समान वचन के संयुक्त प्रभाव का शुद्ध करने वाला परिणाम होना चाहिए!

हमारे जीवन में ऐसी कुछ बातें हो सकती हैं जो परमेश्वर को हमारे साथ कार्य करने से रोकती हैं। उन बातों को हमें दूर करना होगा।

मैं, ईर्ष्या, घमंड और वासना कुछ नकारात्मक बातें हैं जो परमेश्वर को हमारे साथ कार्य करने से रोक सकती हैं। जब हम प्रभु को अनुमति देंगे कि वह जड़ पर कुल्हाड़ी रखे और हमारे जीवनों के उन क्षेत्रों में शुद्धिकरण का कार्य करे, तब हम न केवल परमेश्वर के लिए बल्कि एक दूसरे के लिए भी बेहतर लोग होंगे।

आशीष रायचूर